ख़ुशबू
(परवीन शाकिर)

ख़ुशबू के लिए।

चली है थाम के बादल के हाथ को ख़ुशबू
हवा के साथ सफ़र का मुक़ाबिला ठहरा ।

ख़ुशबू बता रही है कि वो रास्ते में है
मौज-ए-हवा के हाथ में इसका सुराग है

ए’तराफ

जाने कब तक तिरी तस्वीर निगाहों में रही
हो गई रात तिरे अक्स को तकते तकते
मैं ने फिर तेरे तसव्वुर के किसी लम्हे में
तेरी तस्वीर पे लब रख दिए आहिस्ता से!

खुली आँखों में सपना झाँकता है
वो सोया है कि कुछ कुछ जागता है

तिरी चाहत के भीगे जंगलों में
मिरा तन मोर बन के नाचता है

मुझे हर कैफ़ियत में क्यों न समझे
वो मेरे सब हवाले जानता है

मैं उसकी दस्तरस में हूँ मगर वो
मुझे मेरी रजा से माँगता है

किसी के ध्यान में डूबा हुआ दिल
बहाने से मुझे भी टालता है

सड़क को छोड़ के चलना पड़ेगा
कि मेरे घर का कच्चा रास्ता है

रक्स में रात है बदन की तरह
बारिशों की हवा में बन की तरह

चाँद भी मेरी करवटों का गवाह
मेरे बिस्तर की हर शिकन की तरह

चाक है दामन ए क़बा ए बहार
मेरे ख़्वाबों के पैरहन की तरह

जिंदगी तुझसे दूर रह कर मैं
काट लूंगी जलावतन की तरह

मुझको तस्लीम मेरे चाँद कि मैं
तेरे हमराह हूँ गगन की तरह

बारहा तेरा इंतज़ार किया
अपने ख़्वाबों में इक दुल्हन की तरह

आज मलबूस में है कैसी थकन की ख़ुशबू
रात भर जागी हुई जैसे दुल्हन की ख़ुशबू

पैरहन मेरा मगर उसके बदन की ख़ुशबू
उसकी तरतीब है एक एक शिकन की ख़ुशबू

मुहब्बतों को अभी इज़्ने तकल्लुम न मिले
पास आयी है किसी नर्म सुख़न की ख़ुशबू

क़ामते शहर की जेबाई का आ'लम मत पूछ
मेहरबाँ जब से है उस सर्व-बदन की ख़ुशबू

ज़िक्र शायद किसी ख़ुर्शीद बदन का भी करे
कू-ब-कू फैली हुई मेरे गहन की ख़ुशबू

आरिज़े-गुल को छुआ था कि धनक सी बिखरी
किस क़दर शोख़ है नन्ही सी किरन की ख़ुशबू

किसने ज़ंजीर किया है रम-ए-आहू चश्माँ
निकहते-जाँ है अभी दश्तो-दमन की ख़ुशबू

इस असीरी में भी हर साँस के साथ आती है
सहने ज़िंदाँ में इन्हे दश्त-ए-वतन की ख़ुशबू

करिया-ए-जाँ में कोई फूल खिलाने आये
वो मेरे दिल पे नया ज़ख़्म लगाने आये

मेरे वीरान दरीचों में भी ख़ुश्बू जागे
वो मेरे घर के दर-ओ-बाम सजाने आये

उससे इक बार तो रूठूँ मैं उसी की मानिन्द
और मेरी तरह से वो मुझ को मनाने आये

इसी कूचे में कई उस के शनासा भी तो हैं
वो किसी और से मिलने के बहाने आये

अब न पूछूँगी मैं खोये हुए ख़्वाबों का पता
वो अगर आये तो कुछ भी न बताने आये

ज़ब्त की शहर-पनाहों की, मेरे मालिक! ख़ैर
ग़म का सैलाब अगर मुझ को बहाने आये

चेहरा मेरा था निगाहें उसकी
ख़ामोशी में भी वो बातें उसकी

मेरे चेहरे पे ग़ज़ल लिखती गयीं
शेर कहती हुई आँखें उसकी

शोख लम्हों का पता देने लगी
तेज़ होती हुई साँसें उसकी

ऐसे मौसम भी गुज़ारे हमने
सुबहें जब अपनी थीं शामें उसकी

ध्यान में उसके ये आलम था कभी
आँख महताब की, यादें उसकी

रंगजू बन्दा वो, आए तो सही!
फूल तो फूल हैं, शाखें उसकी

फ़ैसला मौजे-हवा ने लिखा
आंधियाँ मेरी, बहारें उसकी

ख़ुद पे भी खुलती न हो जिसकी नज़र
जानता कौन ज़बानें उसकी

नींद इस सोच से टूटी अक्सर
किस तरह कटती हैं रातें उसकी

दूर रहके भी सदा रहती हैं
मुझको थामे हुए बाहें उसकी

अक़्स-ए-ख़ुशबू हूँ, बिखरने से न रोके कोई
और बिखर जाऊँ तो, मुझ को न समेटे कोई

काँप उठती हूँ मैं सोच कर तन्हाई में
मेरे चेहरे पर तेरा नाम न पढ़ ले कोई

जिस तरह ख़्वाब हो गए मेरे रेज़ा-रेज़ा
इस तरह से, कभी टूट कर, बिखरे कोई

मैं तो उस दिन से हिरासाँ हूँ कि जब हुक्म मिले
ख़ुश्क फूलों को किताबों में न रखे कोई

अब तो इस राह से वो शख़्स गुज़रता भी नहीं
अब किस उम्मीद पे दरवाज़े से झाँके कोई

कोई आहट, कोई आवाज़, कोई चाप नहीं
दिल की गलियाँ बड़ी सुनसान हैं-आए कोई

हथेलियों की दुआ फूल ले के आई हो
कभी तो रंग मिरे हाथ का हिनाई हो

कोई तो हो जो मेरे तन को रोशनी भेजे
किसी का प्यार हवा मेरे नाम लाई हो!

गुलाबी पाँव मिरे चम्पई बनाने को
किसी ने सहन में मेहँदी की बाढ़ उगाई हो!

कभी तो हो मेरे कमरे में ऐसा मंज़र भी
बहार देख के खिड़की से, मुस्कराई हो

वो तो सोते जागते रहने के मौसमों का फुसूँ
कि नींद में हों मगर नींद भी न आई हो!

वो रुत भी आई कि मैं फूल की सहेली हुई
महक में चम्पाकली रूप में चमेली हुई

मैं सर्द रात की बरखा से क्यूँ न प्यार करुँ
ये रूत तो है मिरे बचपन के साथ खेली हुई

ज़मीं पे पाँव नहीं पड़ रहे तकब्बुर से
निगार-ए-ग़ाम कोई दुल्हन नयी नवेली हुई

वो चाँद बन के मिरे साथ साथ चलता रहा
मैं उसके हिज्र की रातों में कब अकेली हुई

जो हर्फ़-ए-सादा की सूरत हमेशा लिक्खी गई
वो लड़की तेरे लिए किस तरह पहेली हुई

हमसे जो कुछ कहना है वो बाद में कह
अच्छी नदिया आज ज़रा आहिस्ता बह

हवा मिरे जूड़े में फूल सजाती जा
देख रही हूँ अपने मनमोहन की रह

उसकी ख़फ़गी जाड़े की नरमाती धूप
पारो सखी! इस हिद्दत को हँस खेल के सह

आज तो सचमुच के शहजादे आएँगे
निंदियाँ प्यारी! आज न कुछ परियों की कह

दोपहरों में जब गहरा सन्नाटा हो
शाखों शाखों मौज-ए-हवा की सूरत बह

बाद मुद्दत उसे देखा, लोगों
वो ज़रा भी नहीं बदला, लोगों

खुश न था मुझसे बिछड़ कर वो भी
उसके चेहरे पे लिखा था, लोगों

उसकी आँखें भी कहे देती थीं
रात भर वो भी न सोया, लोगों

अजनबी बन के जो गुजरा है अभी
था किसी वक़्त में अपना, लोगों

दोस्त तो खैर कोई किस का है
उसने दुश्मन भी न समझा, लोगों

रात वो दर्द मेरे दिल में उठा
सुबह तक चैन न आया, लोगों

प्यास सहराओं की फिर तेज हुई
अब्र फिर टूट के बरसा, लोगों

अपनी रुस्वाई तिरे नाम का चर्चा देखूँ
इक ज़रा शेर कहूँ और मैं क्या क्या देखूँ

नींद आ जाए तो क्या महफ़िलें बरपा देखूँ
आँख खुल जाए तो तन्हाई का सहरा देखूँ

शाम भी हो गई, धुँदला गईं आँखें भी मिरी
भूलने वाले, मैं कब तक तिरा रस्ता देखूँ

एक इक कर के मुझे छोड़ गईं सब सखियाँ
आज मैं ख़ुद को तिरी याद में तन्हा देखूँ

काश संदल से मिरी माँग उजाले आ कर
इतने ग़ैरों में वही हाथ जो अपना देखूँ

तू मिरा कुछ नहीं लगता है मगर जान-ए-हयात!
जाने क्यूँ तेरे लिए दिल को धड़कता देखूँ

बंद कर के मिरी आँखें वो शरारत से हँसे
बूझे जाने का मैं हर रोज़ तमाशा देखूँ

सब ज़िदें उसकी मैं पूरी करूँ हर बात सुनूँ
एक बच्चे की तरह से उसे हँसता देखूँ

मुझ पे छा जाए वो बरसात की ख़ुश्बू की तरह
अंग अंग अपना इसी रुत में महकता देखूँ

फूल की तरह मिरे जिस्म का हर लब खुल जाए
पंखुड़ी पंखुड़ी उन होंटों का साया देखूँ

मैंने जिस लम्हे को पूजा है उसे बस इक बार
ख़्वाब बन कर तिरी आँखों में उतरता देखूँ

तू मिरी तरह से यकता है मगर मेरे हबीब!
जी में आता है कोई और भी तुझ सा देखूँ

टूट जाएँ कि पिघल जाएँ मिरे कच्चे घड़े
तुझ को मैं देखूँ कि ये आग का दरिया देखूँ!

सुकूँ भी ख़्वाब हुआ, नींद भी है कम कम फिर
क़रीब आने लगे दूरियों की मंजर फिर

बना रही है तेरी याद मुझको सिल्के-गुहर
पिरो गयी मेरी पलकों में आज शबनम फिर

वो नर्म लहजे में कुछ कह रहा है फिर मुझसे
छिड़ा है प्यार कि कोमल सुरों में मद्धम फिर

तुझे मनाऊँ कि अपनी अना की बात सुनूँ
उलझ रहा है मेरे फ़ैसलों का रेशम फिर

न उसकी बात मैं समझूँ न वो मेरी नज़रें
मुआ'मलात-ए-ज़ुबाँ हो चुका है मुबहम फिर

ये आने वाला नया दुःख भी इसके सर ही गया
चटख गया मेरी अंगुश्तरी का नीलम फिर

वो एक लम्हा कि जब सारे रंग एक हुए
किसी बाहर ने देखा न ऐसा संगम फिर

बहुत अज़ीज़ हैं आँखें मेरी उसे लेकिन
वो जाते जाते इन्हें कर गया है पुरनम फिर

इतना मालूम है

अपने बिस्तर पे बहुत देर से मैं नीम-दराज़
सोचती थी कि वो इस वक़्त कहाँ पर होगा
मैं यहाँ हूँ मगर उस कूचा-ए-रंग-ओ-बू में
रोज़ की तरह से वो आज भी आया होगा
और जब उस ने वहाँ मुझ को न पाया होगा!?
आप को इल्म है वो आज नहीं आई हैं?
मेरी हर दोस्त से उस ने यही पूछा होगा
क्यूँ नहीं आई वो क्या बात हुई है आख़िर
ख़ुद से इस बात पे सौ बार वो उलझा होगा
कल वो आएगी तो मैं उस से नहीं बोलूँगा
आप ही आप कई बार वो रूठा होगा
वो नहीं है तो बुलंदी का सफ़र कितना कठिन
सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उस ने ये सोचा होगा
राहदारी में हरे लॉन में फूलों के क़रीब
उस ने हर सम्त मुझे आन के ढूँडा होगा
नाम भूले से जो मेरा कहीं आया होगा
ग़ैर-महसूस तरीक़े से वो चौंका होगा
एक जुमले को कई बार सुनाया होगा
बात करते हुए सौ बार वो भूला होगा

ये जो लड़की नई आई है कहीं वो तो नहीं
उस ने हर चेहरा यही सोच के देखा होगा
जान-ए-महफ़िल है मगर आज फ़क़त मेरे बग़ैर
हाए किस दर्जा वही बज़्म में तन्हा होगा
कभी सन्नाटों से वहशत जो हुई होगी उसे
उस ने बे-साख़्ता फिर मुझ को पुकारा होगा
चलते चलते कोई मानूस सी आहट पा कर
दोस्तों को भी किस उज़्र से रोका होगा
याद कर के मुझे नम हो गई होंगी पलकें
"आँख में पड़ गया कुछ" कह के ये टाला होगा
और घबरा के किताबों में जो ली होगी पनाह
हर सतर में मिरा चेहरा उभर आया होगा
जब मिली होगी उसे मेरी अलालत की ख़बर
उस ने आहिस्ता से दीवार को थामा होगा
सोच कर ये कि बहल जाए परेशानी-ए-दिल
यूँही बे-वज्ह किसी शख़्स को रोका होगा!
इत्तिफ़ाक़न मुझे उस शाम मिरी दोस्त मिली
मैं ने पूछा कि सुनो आए थे वो? कैसे थे?
मुझ को पूछा था मुझे ढूँडा था चारों जानिब?
उस ने इक लम्हे को देखा मुझे और फिर हँस दी
इस हँसी में तो वो तल्ख़ी थी कि इस से आगे
क्या कहा उस ने मुझे याद नहीं है लेकिन
इतना मालूम है ख़्वाबों का भरम टूट गया!

फिर मेरे शह्र से गुज़रा है वो बदल की तरह
दस्ते गुल फैला हुआ है मेरे आँचल की तरह

कह रहा है किसी मौसम की कहानी अबतक
जिस्म बरसात में भीगे हुए जंगल की तरह

ऊंची आवाज़ में उसने तो कभी बात न की
ख़फ़गियों में भी वो लहजा रहा कोयल की तरह

मिल के उस शख्स से मैं लाख ख़ामोशी से चलूँ
बोल उठती है नज़र पाँव के छागल की तरह

पास जब तक वो रहे दर्द थमा रहता है
फैलता जाता है फिर आँख के काजल की तरह

अब किसी तौर से घर जाने की सूरत ही नहीं
रास्ते मेरे लिए हो गए हैं दलदल की तरह

जिस्म के तीरा-ओ -आसेबज़दा मंदिर में
दिल सरे शाम सुलग उठता है संदल की तरह

मैं जब भी चाहूँ उसे छू के देख सकती हूँ
मगर वो शख़्स कि लगता है अब भी ख़्वाब कोई

दरवाज़ा जो खोला तो नज़र आए खड़े वो
हैरत है मुझे आज किधर भूल पड़े हो

भूला नहीं दिल हिज्र के लम्हात कड़े वो
रातें तो बड़ी थीं ही मगर दिन भी बड़े वो

क्यों जान पे बन आई है, बिगड़ा है अगर वो
उसकी तो ये आदत कि हवाओं से लड़े वो

इल्ज़ाम थे उसके कि बहारों के पयामात
ख़ुशबू सी बरसने लगी, यूँ फूल झड़े वो

हर शख़्स मुझे तुझसे जुदा करने का ख़्वाहाँ
सुन पाए अगर एक तो दस जाके जड़े वो

बच्चे की तरह चाँद को छूने की तमन्ना
दिल को कोई शह दे दे तो क्या क्या न अड़े वो

तूफ़ाँ है तो क्या ग़म, मुझे आवाज़ तो दीजे
क्या भूल गए आप मेरे कच्चे घड़े वो

ये ग़नीमत है कि उन आँखों ने पहचाना हमें
कोई तो समझा दयारे ग़ैर में अपना हमें

वो कि जिनके हाथ में तक़दीरे-फ़स्ले-गुल रही
दे गए सूखे हुए पत्तों का नज़राना हमें

वस्ल में तेरे ख़राबे भी लगें घर की तरह
और तेरे हिज्र में बस्ती भी वीराना हमें

सच तुम्हारे सारे कड़वे थे, मगर अच्छे लगे
फाँस बनकर रह गया बस एक अफ़साना हमें

अजनबी लोगों में हो तुम और इतनी दूर हो
एक उलझन सी रहा करती है रोज़ाना हमें

सुनते हैं क़ीमत तुम्हारी लग रही है आजकल
सबसे अच्छे दाम किसके हैं ये बतलाना हमें
ताकि उस ख़ुशबख़्त ताजिर को मुबरकबाद दें
और उसके बाद फिर ख़ुद को भी समझाना हमें

सिर्फ़ एक लड़की

अपने सर्द कमरे में
मैं उदास बैठी हूँ
नीम-व दरीचों से
नम हवाएँ आती हैं
मेरे जिस्म को छूकर
आग सी लगाती हैं
तेरा नाम ले ले कर
मुझको गुदगुदाती हैं

काश मेरे पर होते
तेरे पास उड़ आती
काश मैं हवा होती
तुझको छूके लौट आती
मैं नहीं मगर कुछ भी

संग-दिल रिवाजों ए
आहनी हिसारों में
उम्रक़ैद की मुलज़िम
सिर्फ़ एक लड़की हूँ!

लम्हाते वस्ल कैसे हिजाबों में कट गये
वो हाथ बढ़ ना पाए कि घूँघट सिमट गए

ख़ुशबू तो साँस लेने को ठहरी थी राह में
हम बदगुमान ऐसे कि घर को पलट गए

मिलना, दोबारा मिलने का वादा, जुदाइयाँ
इतने बहुत से काम, अचानक निमट गए

रोयीं हूँ आज खुलके बड़ी मुद्दतों के बाद
बादल जो आसमान पे छाए थे, छँट गए

किस ध्यान से पुरानी क़िताबें खुली थी कल
आयी हवा तो कितने वरक़ ही उलट गए

शहरे-ए-वफ़ा में धूप का साथी कोई नहीं
सूरज सरों पे आया तो साये भी घट गए

इतनी जसारतें तो उसी को नसीब थीं
झोंके हवा के कैसे गले से लिपट गए

दस्ते-हवा ने जैसे दराँती सम्भाल ली
अबके सरों की फ़स्ल से खलिहान पट गए

टूटी है मेरी नींद मगर तुमको इससे क्या
बजते रहें हवाओं से दर, तुमको इससे क्या

तुम मौज-मौज मिस्ल-ए-सबा घूमते फिरो
कट जाएँ मेरी सोच के पर, तुमको इससे क्या

औरों का हाथ थामो, उन्हें रास्ता दिखाओ
मैं भूल जाऊँ अपना ही घर, तुमको इससे क्या

अब्र-ए-गुरेज़-पा को बरसने से क्या गरज़
सीपी में बन न पाए गुहर, तुमको इससे क्या

ले जाएँ मुझको माल-ए-ग़नीमत के साथ अदू
तुमने तो डाल दी है सिपर, तुमको इससे क्या

तुमने तो थक के दश्त में ख़ेमे लगा दिए
तन्हा कटे किसी का सफ़र, तुमको इससे क्या

मुक़द्दर

मैं वो लड़की हूँ
जिसको पहली रात
कोई घूँघट उठके ये कह दे-
मेरा सबकुछ तेरा है दिल की सिवा

शे'र

लो मैं आँखें बंद किए लेती हूँ,अब तुम रुख़सत हो
दिल तो जाने क्या कहता है, लेकिन दिल का कहना क्या

चाँद उस देस में निकला कि नहीं
जाने वो आज भी सोया कि नहीं

ऐ मुझे जागता पाती हुई रात
वो मेरी नींद से बहला कि नहीं

भीड़ में खोया हुआ बच्चा था
उसने खुद को अभी ढूँढा कि नहीं

मुझको तकमील समझने वाला
अपने मेयार में बदला कि नहीं

गुनगुनाते हुए लम्हों में उसे
ध्यान मेरा कभी आया कि नहीं

बंद कमरे में कभी मेरी तरह
शाम के वक़्त वो रोया कि नहीं

मेरी ख़ुद्दारी बरतने वाले
तेरा पिन्दार भी टूटा कि नहीं

अलविदा सब्त हुई थी जिसपर
अब भी रोशन है वो माथा कि नहीं

नए मौसम की ख़बर लेके हवा आयी हो
काम पतझड़ के, असीरों के दुआ आयी हो

लौट आयी हो वो शब जिसके गुज़र जाने पे
घाट से पायलें बजने की सदा आयी हो

इसी उम्मीद में हर मौजे-हवा को चूमा
छूके शायद मेरे प्यारों की क़बा आयी हो

गीत जितने लिखे उनके लिए ऐ मौजे-सबा
दिल यही चाहा कि तू उनको सुना आयी हो

आहटें सिर्फ़ हवाओं की ही दस्तक न बने
अब तो दरवाज़ों पे मानूस सदा आयी हो

यूँ सरेआम, खुले सर मैं कहाँ तक बैठूँ
किसी जानिब से तो अब मेरी रिदा आयी हो

जब भी बरसात के दिन आए यही जी चाहा
धूप के शहर में भी घिर के घटा आयी हो

तेरे तोहफ़े तो सब अच्छे हैं मगर मौजे-बहार
अबके मेरे लिए ख़ुशबू-ए-हिना आयी हो

कू-ब-कू फैल गई बात शनासाई की
उस ने ख़ुशबू की तरह मेरी पज़ीराई की

कैसे कह दूँ कि मुझे छोड़ दिया है उस ने
बात तो सच है मगर बात है रुस्वाई की

वो कहीं भी गया लौटा तो मिरे पास आया
बस यही बात है अच्छी मिरे हरजाई की

तेरा पहलू तिरे दिल की तरह आबाद रहे
तुझ पे गुज़रे न क़यामत शब-ए-तन्हाई की

उस ने जलती हुई पेशानी पे जब हाथ रखा
रूह तक आ गई तासीर मसीहाई की

अब भी बरसात की रातों में बदन टूटता है
जाग उठती हैं अजब ख़्वाहिशें अंगड़ाई की

दिल पे एक तरफ़ा क़यामत करना
मुस्कुराते हुए रुख़सत करना

अच्छी आँखें जो मिली हैं उसको
कुछ तो लाज़िम हुआ वहशत करना

जुर्म किसका था, सज़ा किसको मिली
क्या गयी बात पे हुज्जत करना

कौन चाहेगा तुम्हें मेरी तरह
अब किसी से ना मोहब्बत करना

घर का दरवाज़ा खुला रखा है
वक़्त मिल जाये तो ज़हमत करना

नींद तो ख़्वाब हो गई शायद
जिन्स-ए-नायाब हो गई शायद

अपने घर की तरह वो लड़की भी
नज़्र-ए-सैलाब हो गई शायद

तुझको सोचूँ तो रोशनी देखूँ
याद महताब हो गई शायद

एक मुद्दत से आँख रोयी नहीं
झील पायाब हो गयी शायद

हिज्र के पानियों में इश्क की नाव
कहीं ग़र्क़ाब हो गई शायद

चन्द लोगों की दस्तरस में है
ज़ीस्त कमख़ाब हो गई शायद

अज़ाब अपने बिखेरूँ कि मुर्तसिम कर लूँ
मैं इनसे ख़ुद को ज़रब दूँ कि मुन्क़सिम कर लूँ

मैं आँधियों की मिज़ाज-आश्ना रही हूँ मगर
ख़ुद अपने हाथ से क्यों घर को मुन्हदिम कर लूँ

बिछड़ने वालों के हक़ में कोई दुआ कर के
शिकस्ते-ख़्वाब की साअत को मुह्तशिम कर लूँ

बचाव शीशों के घर का तलाश कर ही लिया
यही कि संग-बदस्तों को मुनसरिम कर लूँ

मैं थक गयी हूँ इस अंदर की ख़ाना-जंगी से
बदन को "सामरा", आँखों को "मो'तसिम" कर लूँ

मेरी गली में कोई शहरयार आता है
मिला है हुक़्म कि लहज़े को मोहतरिम कर लूँ

दुआ का टूटा हुआ हर्फ़ सर्द आह में है
तिरी जुदाई का मंज़र अभी निगाह में है

तिरे बदलने के बा-वस्फ़ तुझ को चाहा है
ये ए'तिराफ़ भी शामिल मिरे गुनाह में है

अज़ाब देगा तो फिर मुझ को ख़्वाब भी देगा
मैं मुतमइन हूँ मेरा दिल तिरी पनाह में है

बिखर चुका है मगर मुस्कुरा के मिलता है
वो रख-रखाव अभी मेरे कज-कुलाह में है

जिसे बहार के मेहमान ख़ाली छोड़ गए
वो इक मकान अभी तक मकीं की चाह में है

यही वो दिन थे जब इक दूसरे को पाया था
हमारी सालगिरह ठीक अब के माह में है

मैं बच भी जाऊँ तो तन्हाई मार डालेगी
मिरे क़बीले का हर फ़र्द क़त्ल-गाह में है

आँगनों में उतरा है, बाम-ओ-दर का सन्नाटा
मेरे दिल पे छाया है मेरे घर का सन्नाटा

रात की ख़ामोशी तो फिर भी मेहरबाँ निकली
कितना जानलेवा है दोपहर का सन्नाटा

सुबह मेरे जूड़े की हर कली सलामत थी
गूंजता था ख़ुशबू में रात भर का सन्नाटा

अपने दोस्त को लेकर तुम वहाँ गए होगे
मुझको पूछता होगा रहगुज़र का सन्नाटा

ख़त को चूमकर उसने आँख से लगाया था
कुल जवाब था गोया लम्हे भर का सन्नाटा

तूने उसके आँखों को ग़ौर से पढ़ा क़ासिद!
कुछ तो कह रहा होगा उस नज़र का सन्नाटा

आँखों से मेरी कौन मिरे ख़्वाब ले गया
चश्म-ए-सदफ़ से गौहर-ए-नायाब ले गया

इस शहर-ए-खुशजमाल को किसकी लगी है आह
किस दिलज़दा का गिरिया-ए-खूंनाब ले गया

कुछ नाख़ुदा के फ़ैज़ से साहिल भी दूर था
कुछ क़िस्मतों के फेर में गिरदाब ले गया

वाँ शहर डूबते हैं इधर बहस कि उन्हें
ख़ुम ले गया है या ख़ुम-ए-मेहराब ले गया

कुछ खोयी खोयी आँखें भी मौजों के साथ थीं
शायद उन्हें बहा के कोई ख़्वाब ले गया

तूफ़ाने-अब्र-ओ-बाद में सब गीत खो गए
झोंका हवा का हाथ से मिज़राब ले गया

गैरों की दुश्मनी ने न मारा मगर हमें
अपनों के इल्तिफात का ज़हराब ले गया

ए आँख अब तो ख़्वाब की दुनिया से लौट आ
"मिज़गां तो खोल, शहर को सैलाब ले गया"

शदीद दुःख था अगरचे तिरी जुदाई का
सिवा है रंज हमें तेरी बेवफाई का

तुझे भी ज़ौक नए तज़रबात का होगा
हमें भी शौक था कुछ बख्त आज़माई का

जो मेरे सर से दुपट्टा न हटने देता था
उसे भी रंज नहीं मेरी बे-रिदाई का

सफ़र में रात जो आई तो साथ छोड़ गए
जिन्होंने हाथ बढ़ाया था रहनुमाई का

रिदा छिनी मिरे सर से मगर मैं क्या कहती
कटा हुआ तो न था हाथ मेरे भाई का

मिले तो ऐसे, रग़-ए-जाँ को जैसे छू आए
जुदा हुए तो वही कर्ब नारसाई का

कोई सवाल जो पूछे तो क्या कहूँ उससे
बिछड़ने वाले सबब तो बता जुदाई का

मैं सच को सच भी कहूँगी मुझे खबर ही न थी
तुझे भी इल्म न था मेरी इस बुराई का

न दे सका मुझे ताबीर, ख़्वाब तो बख़्शे
मैं एहतराम करूँगीं तेरी बड़ाई का

चिराग़-ए-माह लिए तुझको ढूँढती घर-घर
तमाम रात मैं याक़ूत चुन रही थी मगर

ये क्या कि मैं तेरी ख़ुशबू का सिर्फ़ ज़िक्र सुनूँ
तू अक्से-मौज-ए-गुल है तो जिस्मो-जाँ में उतर

ज़रा ये हब्स कटे, खुल के साँस ले पाऊँ
कोई हवा तो रवाँ हो, सबा हो या सरसर

गए दिनों के ता'कुब में तितलियों की तरह
तेरे ख़्याल के हमराह कर रह हूँ सफ़र

ठहर गए हैं कदम, रास्ते भी ख़त्म हुए
मसाफ़तें रगो-पै में उतर रही हैं मगर

मैं सोचती थी तेरा कुर्ब कुछ सकूँ देगा
उदासियाँ हैं कि कुछ और बढ़ गयी मिलकर

तेरा ख़्याल कि है तार-ए-अंकबूत तमाम
मेरा वजूद, कि जैसे कोई पुराना खण्डर

नींद तो ख़्वाब है और, हिज्र की शब ख़्वाब कहाँ
इस अमावस की घनी रात में महताब कहाँ

रंज सहने की मेरे दिल में तब-ओ-ताब कहाँ
और ये भी है कि पहले से वो आसाब कहाँ

मैं भँवर से तो निकल आयी और अब सोचती हूँ
मौजे-साहिल ने किय है मुझे गरक़ाब कहाँ

मैंने सौंपी थी तुझे आख़िरी पूँजी अपनी
छोड़ आया है मेरी नाव तहे-आब कहाँ

है रवाँ आग का दरिया मेरी शिरयानों में
मौत के बाद भी हो पाएगा पायाब कहाँ

बंद बाँधा है सिरों का मेरे दहक़ानों ने
अब मेरी फ़स्ल को ले जाएगा सैलाब कहाँ

गूँगे लबों पे हर्फ़-ए-तमन्ना किया मुझे
किस कोर-चश्म-शब में सितारा किया मुझे

ज़ख़्म-ए-हुनर को समझे हुए है गुल-ए-हुनर
किस शहर-ए-ना-सिपास में पैदा किया मुझे

जब हर्फ़-ना-शनास यहाँ लफ़्ज़-फ़हम हैं
क्यूँ ज़ौक़-ए-शेर दे के तमाशा किया मुझे

ख़ुशबू है चाँदनी है लब-ए-जू है और मैं
किस बे-पनाह रात में तन्हा किया मुझे

दी तिश्नगी ख़ुदा ने तो चश्मे भी दे दिए
सीने में दश्त आँखों में दरिया किया मुझे

मैं यूँ सँभल गई कि तिरी बेवफ़ाई ने
बे-ए'तिबारियों से शनासा किया मुझे

वो अपनी एक ज़ात में कुल काएनात था
दुनिया के हर फ़रेब से मिलवा दिया मुझे

औरों के साथ मेरा ता'रुफ़ भी जब हुआ
हाथों में हाथ ले के वो सोचा किया मुझे

बीते दिनों का अक्स न आइंदा का ख़याल
बस ख़ाली ख़ाली आँखों से देखा किया मुझे

तू बदलता है तो बे-साख़्ता मेरी आँखें
अपने हाथों की लकीरों से उलझ जाती हैं

जुस्तुजू खोए हुओं की उम्र भर करते रहे
चाँद के हमराह हम हर शब सफ़र करते रहे

रास्तों का इल्म था हम को न सम्तों की ख़बर
शहर-ए-ना-मालूम की चाहत मगर करते रहे

हम ने ख़ुद से भी छुपाया और सारे शहर को
तेरे जाने की ख़बर दीवार-ओ-दर करते रहे

वो न आएगा हमें मालूम था इस शाम भी
इंतिज़ार उस का मगर कुछ सोच कर करते रहे

आज आया है हमें भी उन उड़ानों का ख़याल
जिन को तेरे ज़ो'म में बे-बाल-ओ-पर करते रहे

ज़िंदगी से नज़र मिलाओ कभी
हार के बाद मुस्कुराओ कभी

तर्के उल्फ़त के बाद उम्मीद-ए-वफ़ा
रेत पर चल सके है नाव कभी

अब ज़फ़ा की सराहतें बेकार
बात से भर सका है घाव कभी

शाख़ से मौजे-गुल थमी है कहीं,
हाथ से रुक सका बहाव कभी

अन्धे ज़ेहनों से सोचने वालों
हर्फ़ में रोशनी मिलाओ कभी

बारिशें क्या ज़मीं के दुःख बाँटें
आँसुओं से बुझा अलाव कभी

अपने अपीन की ख़बर रखना
कश्तियाँ तुम अगर जलाओ कभी

समुंदरों के उधर से कोई सदा आई
दिलों के बंद दरीचे खुले हवा आई

सरक गए थे जो आँचल वो फिर सँवारे गए
खुले हुए थे जो सर उन पे फिर रिदा आई

उतर रही हैं अजब ख़ुशबुएँ रग-ओ-पै में
ये किस को छू के मिरे शहर में सबा आई

उसे पुकारा तो होंटों पे कोई नाम न था
मोहब्बतों के सफ़र में अजब फ़ज़ा आई

कहीं रहे वो मगर ख़ैरियत के साथ रहे
उठाए हाथ तो याद एक ही दुआ आई

सहाब था कि सितारा गुरेज़-पा ही लगा
वो अपनी ज़ात के हर जंग में हवा ही लगा

मैं ऐसे शख़्स की मासूमियत पे क्या लिखूँ
जो मुझको अपनी ख़ताओं में भी भला ही लगा

ज़बाँ से चुप है मगर आँख बात करती है
नज़र उठाए हैं जब भी तो बोलता ही लगा

जो ख़्वाब देने पे क़ादिर था मेरी नज़रों में
अज़ाब देते हुए भी मुझे ख़ुदा ही लगा

न मेरे लुत्फ़ पे हैराँ न अपनी उलझन पे
मुझे ये शख़्स तो हर शख़्स से जुदा ही लगा

तेरा घर और मेरा जंगल भीगता है साथ साथ
ऐसी बरसातें कि बादल भीगता है साथ साथ

बचपने का साथ है फिर एक से दोनों के दुख
रात का और मेरा आँचल भीगता है साथ साथ

वो अजब दुनिया कि सब ख़ंजर-ब-कफ़ फिरते हैं और
काँच के प्यालों में संदल भीगता है साथ साथ

बारिश-ए-संग-ए-मलामत में भी वो हमराह है
मैं भी भीगूँ ख़ुद भी पागल भीगता है साथ साथ

लड़कियों के दुख अजब होते हैं सुख उस से अजीब
हँस रही हैं और काजल भीगता है साथ साथ

बारिशें जाड़े की और तन्हा बहुत मेरा किसान
जिस्म और इकलौता कम्बल भीगता है साथ साथ

बजा कि आँख में नींदों के सिलसिले भी नहीं
शिकस्त-ए-ख़्वाब के अब मुझ में हौसले भी नहीं

नहीं नहीं ये ख़बर दुश्मनों ने दी होगी
वो आए, आ के चले भी गए मिले भी नहीं

ये कौन लोग अँधेरों की बात करते हैं
अभी तो चाँद तिरी याद के ढले भी नहीं

अभी से मेरे रफ़ूगर के हाथ थकने लगे
अभी तो चाक मिरे ज़ख़्म के सिले भी नहीं

ख़फ़ा अगरचे हमेशा हुए मगर अब के
वो बरहमी है कि हम से उन्हें गिले भी नहीं

दस्तरस से अपनी बाहर हो गए
जब से हम उनको मयस्सर हो गए

हम जो कहलाये तुलु'-ए-माहताब
डूबते सूरज का मंज़र हो गए

शहर ए खूबाँ का यही दस्तूर है
मुड़ के देखा और पत्थर हो गए

बेवतन कहलाये अपने देस में
अपने घर में रह के बेघर हो गए

सुख तेरी मीरास थे, तुझको मिले
दुःख हमारे थे मुक़द्दर हो गए

वो सराब उतरा रगो-पै में कि हम
ख़ुद फ़रेबी में समंदर हो गए

तेरी खुदगर्ज़ी से खुद को सोचकर
आज हम तेरे बराबर हो गए

लम्हा लम्हा वक्त के झील में डूब गया
अब पानी में उतरें भी तो पाऐं क्या

तूफ़ाँ जब आया तो झील में कूद पड़ा
वो लड़का जो कश्ती खेने निकला था

कितनी देर तक अपना आप बचाएगी
नन्ही सी एक लहर को मौजों ने घेरा

अपने ख़्वाबों की नाज़ुक पतवारों से
तैर रहा है सतह-ए-आब पे एक पत्ता

हल्की-हल्की लहरें नीलम पानी में
धीरे-धीरे डूबे याक़ूती नैया

शबनम के रुखसारों पे सूरज के होंठ
ठहर गया है वस्ल का इक रोशन लम्हा

चाँद उतर आया है गहरे पानी में
जहाँ के आइने में जैसे अक्स तेरा

कैसे इन लम्हों में तेरे पास आऊँ
सागर गहरा, रात अंधेरी, मैं तन्हा

ठहर के देखे तो रुक जाए नब्ज सा'अत की
शब-ए-फ़िराक़ की क़ामत है किस क़यामत की

वो रतजगे, वो गयी रात तक सुख़नकारी
शबें गुज़ारी है हमने भी कुछ रियासत की

वो मुझको बर्फ़ के तूफ़ाँ में कैसे छोड़ गया
हवा-ए-सर्द में भी जब मेरी हिफ़ाज़त की

सफ़र में चाँद का माथा जहाँ भी धुँधलाया
तेरी निगाह की ज़ेबाई ने क़यादत की

हवा ने मौसमे-बाराँ से साज़िशें कर लीं
मगर शजर को ख़बर ही नहीं शरारत की

मस'अला

"पत्थर की ज़बाँ" की शाएरा ने
इक महफ़िल-ए-शेर-ओ-शायरी में
जब नज़्म सुनाते मुझ को देखा
कुछ सोच के दिल में मुस्कुराई
जब मेज़ पर हम मिले तो उस ने
बढ़ कर मिरे हाथ ऐसे थामे
जैसे मुझे खोजती हो कब से
फिर मुझ से कहा कि आज, 'परवीन'!
जब शेर सुनाते तुम को देखा
मैं ख़ुद को बहुत ही याद आई
वो वक़्त कि जब तुम्हारी सूरत
मैं भी यूँ ही शेर कह रही थी
लिखती थी इसी तरह की नज़्में
पर अब तो वो सारी नज़्में ग़ज़लें
गुज़रे हुए ख़्वाब की हैं बातें!

मैं सब को डिसओन कर चुकी हूँ!
"पत्थर की ज़बाँ" की शाएरा के
चम्बेली से नर्म हाथ थामे
"ख़ुश्बू" की सफ़ीर सोचती थी
दर-पेश हवाओं के सफ़र में
पल पल की रफ़ीक़-ए-राह मेरे

अंदर की ये सादा-लौह 'ऐलिस'
हैरत की जमील वादियों से
वहशत के मुहीब जंगलों में
आएगी तो उस का फूल-लहजा
क्या जब भी सबा-नफ़स रहेगा!?
वो ख़ुद को डिसओन कर सकेगी!?

ओथेलो

अपने फ़ोन पे अपना नंबर
बार-बार डायल करती हूँ
सोच रही हूँ
कब तक उसका टेलीफोन एंगेज रहेगा
दिल कुढ़ता है
इतनी इतनी देर तलक
वो किससे बातें करता है

मता-ए-क़ल्बो-जिगर हैं हमें कहीं से मिलें
मगर वो ज़ख़्म जो उस दस्ते-शबनमीं से मिलें

ना शाम है, न घनी रात है, न पिछला पहर
अजीब रंग तेरी चश्मे-सुरमगीं से मिलें

मैं इस विसाल के लम्हे का नाम क्या रखूँ
तेरे लिबास की शिकनें तेरी जबीं से मिलें

सताइशें मेरे अहबाब की नवाज़िशें हैं
मगर सिले तो मुझे अपनी नुक़्ता-चीं से मिलें

तमाम उम्र की ना-मो'तबर रिफ़ाक़त से
कहीं भला हो कि पल भर मिलें, यक़ीं से मिलें

यही रहा है मुक़द्दर मेरे किसानों का
कि चाँद बोए और उनको गहन ज़मीं से मिलें

अक्से-शिकस्त-ए-ख़्वाब बहर-सू बिखेरिए
चेहरे पे ख़ाक, ज़ख़्म पे ख़ुशबू बिखेरिए

कोई गुजरती रात के पिछले पहर कहे
लम्हों को क़ैद कीजिए, गेसू बिखेरिए

धीमे सुरों में कोई मधुर गीत छेड़िये
ठहरी हुई हवाओं में जादू बिखेरिए

गहरी हक़ीक़तें भी उतरती रहेंगी फिर
ख़्वाबों की चाँदनी तो लब-ए-जू बिखेरिए

दामान-ए-शब के नाम कोई रोशनी तो हो
तारे नहीं नसीब तो आँसू बिखेरिए

दश्ते-ग़ज़ाल से कोई ख़ूबी तो माँगिए
शहरे-जमाल में रम-ए-आहू बिखेरिए

वो तो ख़ुश-बू है हवाओं में बिखर जाएगा
मस'अला फूल का है फूल किधर जाएगा

हम तो समझे थे कि इक ज़ख़्म है भर जाएगा
क्या ख़बर थी कि रग-ए-जाँ में उतर जाएगा

वो हवाओं की तरह ख़ाना-ब-जाँ फिरता है
एक झोंका है जो आएगा गुज़र जाएगा

वो जब आएगा तो फिर उस की रिफ़ाक़त के लिए
मौसम-ए-गुल मिरे आँगन में ठहर जाएगा

आख़िरश वो भी कहीं रेत पे बैठी होगी
तेरा ये प्यार भी दरिया है उतर जाएगा

मुझ को तहज़ीब के बर्ज़ख़ का बनाया वारिस
जुर्म ये भी मिरे अज्दाद के सर जाएगा

पानियों पानियों जब चाँद का हाला उतरा
नींद की झील पे एक ख़्वाब पुराना उतरा

आज़माइश में कहाँ इश्क़ भी पूरा उतरा
हुस्न के आगे तो तक़दीर का लिखा उतरा

धूप ढलने लगी, दीवार से साया उतरा
सतह हमवार हुई, प्यार का दरिया उतरा

याद से नाम मिटा, ज़ेहन से चेहरा उतरा मिलें
चन्द लम्हों में नज़र से तेरे क्या क्या उतरा

आज की शब मैं परेशान हूँ तो यूँ लगता है
आज महताब का चेहरा भी है उतरा उतरा

मेरी वहशत रम-ए-आहू से कहीं बढ़कर थी
जब मेरी ज़ात में तन्हाई का सहरा उतरा

एक शब-ए-ग़म के अंधेरे पे नहीं है मौक़ूफ
तूने जो ज़ख़्म लगाया है वो गहरा उतरा

ख़ुशबू भी उसकी तर्ज़े-पज़ीराइ पर गयी
धीरे से मेरे हाथ को छूकर गुजर गयी

आँधी की ज़द में आए हुए फूल की तरह
मैं टुकड़े-टुकड़े होके फ़ज़ा में बिखर गयी

शाख़ों नें फूल पहने थे कुछ देर क़ब्ल ही
क्या हो गया, क़बा-ए-शज़र क्यों उतर गयी

उन उँगलियों का लम्स था और मेरी
गेसू बिखर रहे थे तो क़िस्मत संवर गयी

उतरे न मेरे घर मिलें में वो महताब रंग लोग
मेरी दुआ-ए-नीमशबी बे-असर गयी

पूरा दुख और आधा चाँद
हिज्र की शब और ऐसा चाँद

दिन में वहशत बहल गई
रात हुई और निकला चाँद

किस मक़्तल से गुज़रा होगा
इतना सहमा सहमा चाँद

यादों की आबाद गली में
घूम रहा है तन्हा चाँद

मेरी करवट पर जाग उठ्ठे
नींद का कितना कच्चा चाँद

मेरे मुँह को किस हैरत से
देख रहा है भोला चाँद

इतने घने बादल के पीछे
कितना तन्हा होगा चाँद

आँसू रोके नूर नहाए
दिल दरिया तन सहरा चाँद

इतने रौशन चेहरे पर भी
सूरज का है साया चाँद

जब पानी में चेहरा देखा
तू ने किस को सोचा चाँद

बरगद की इक शाख़ हटा कर
जाने किस को झाँका चाँद

बादल के रेशम झूले में
भोर समय तक सोया चाँद

रात के शाने पर सर रक्खे
देख रहा है सपना चाँद

सूखे पत्तों के झुरमुट पर
शबनम थी या नन्हा चाँद

हाथ हिला कर रुख़्सत होगा
उस की सूरत हिज्र का चाँद

सहरा सहरा भटक रहा है
अपने इश्क़ में सच्चा चाँद

रात के शायद एक बजे हैं
सोता होगा मेरा चाँद

दिल-ओ-निगाह पे किस तौर के अज़ाब उतरे
वो माहताब ही उतरा, न उसके ख़्वाब उतरे

कहाँ वो रुत की ज़बीनों पे आफ़ताब उतरे
ज़माना बीत गया उनकी आब-ओ-ताब उतरे

मैं उससे खुल के मिलूँ, सोच का हिजाब उतरे
वो चाहता है मेरी रूह का निक़ाब उतरे

उदास शब में, कड़ी दोपहर के लम्हे में
कोई चराग़, कोई सूरते-गुलाब उतरे

कभी कभी तेरे लहज़े की शबनमीं ठण्डक
समा'अतों के दरीचों पे ख़्वाब-ख़्वाब उतरे

फ़सीले-शहरे-तमन्ना की ज़र्द बेलों पर
तेरा जमाल कभी सूरते-सहाब उतरे

तेरी हँसी में नए मौसमों की ख़ुशबू थी
नवेद हो कि बदन से पुराने ख़्वाब उतरे

सुपुर्दगी का मुजस्सम सवाल बनके खिलूँ
मिसाले-क़तरा-ए-शबनम तेरा जवाब उतरे

तेरी तरह, मेरी आँखें भी मो'तबर न रहीं
सफ़र से क़ब्ल ही रास्तों में वो सराब उतरे

हमें खबर है हवा का मिज़ाज रखते हो
मगर ये क्या, कि ज़रा देर को रुके भी नहीं

धनक धनक मिरी पोरों के ख़्वाब कर देगा
वो लम्स मेरे बदन को गुलाब कर देगा

क़बा-ए-जिस्म के हर तार से गुज़रता हुआ
किरन का प्यार मुझे आफ़्ताब कर देगा

जुनूँ-पसंद है दिल और तुझ तक आने में
बदन को नाव लहू को चनाब कर देगा

मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी
वो झूट बोलेगा और ला-जवाब कर देगा

अना-परस्त है इतना कि बात से पहले
वो उठ के बंद मिरी हर किताब कर देगा

सुकूत-ए-शहर-ए-सुख़न में वो फूल सा लहजा
समा'तों की फ़ज़ा ख़्वाब ख़्वाब कर देगा

इसी तरह से अगर चाहता रहा पैहम
सुख़न-वरी में मुझे इंतिख़ाब कर देगा

मिरी तरह से कोई है जो ज़िंदगी अपनी
तुम्हारी याद के नाम इंतिसाब कर देगा

कमाल-ए-ज़ब्त को ख़ुद भी तो आज़माऊँगी
मैं अपने हाथ से उस की दुल्हन सजाऊँगी

सुपुर्द कर के उसे चाँदनी के हाथों में
मैं अपने घर के अँधेरों को लौट आऊँगी

बदन के कर्ब को वो भी समझ न पाएगा
मैं दिल में रोऊँगी आँखों में मुस्कुराऊँगी

वो क्या गया कि रिफ़ाक़त के सारे लुत्फ़ गए
मैं किस से रूठ सकूँगी किसे मनाऊँगी

अब उस का फ़न तो किसी और से हुआ मंसूब
मैं किस की नज़्म अकेले में गुनगुनाऊँगी

वो एक रिश्ता-ए-बेनाम भी नहीं लेकिन
मैं अब भी उस के इशारों पे सर झुकाऊँगी

बिछा दिया था गुलाबों के साथ अपना वजूद
वो सो के उट्ठे तो ख़्वाबों की राख उठाऊँगी

समाअ'तों में घने जंगलों की साँसें हैं
मैं अब कभी तिरी आवाज़ सुन न पाऊँगी

जवाज़ ढूँड रहा था नई मोहब्बत का
वो कह रहा था कि मैं उस को भूल जाऊँगी

कच्चे ज़ख्मों से बदन सजने लगे हैं रातों के
सब्ज़ तोहफ़े मुझे आने लगे बरसातों के

जैसे सब रंग धनक के मुझे छूने आए
अक्स लहराते हैं आँखों में मेरी सातों के

बारिशें आयीं और आने लगे ख़ुशरंग अज़ाब
जैसे संदूक़चे खुलने लगे सौग़ातों के

छू के गुज़री थी ज़रा जिस्म को बारिश की हवा
आँच देने लगे मल्बूस जवाँ रातों के

पहरों बातें वो हरी बेलों के साये साये
वाक़ये खूब हुए ऐसी मुलाक़ातों के

क़र्या-ए-जाँ में कहाँ अब वो सुख़न के मौसम
सोच चमकाती रहे रंग गयी बातों के

किन लकीरों की नज़र से तेरा रास्ता देखूँ
नक़्श मादूम हुए जाते हैं इन हाथों के

तू मसीहा है बदन तक है तेरी चारागरी
तेरे इमकाँ में कहाँ ज़ख़्म कड़ी बातों के

क़ाफ़िले निकहत-ओ-अनवार के बेसम्त हुए
जबसे दूल्हा नहीं होने लगे बारातों के

फिर रहे हैं मेरे अतराफ़ में बेचेह्रा वजूद
इनका क्या नाम है ये लोग हैं किन ज़ातों के

आसमानों में वो मसरूफ़ बहुत है या फिर
बाँझ होने लगे अल्फ़ाज़ मुनाजातों के

नम हैं पलकें तिरी ऐ मौज-ए-हवा रात के साथ
क्या तुझे भी कोई याद आता है बरसात के साथ

रूठने और मनाने की हदें मिलने लगीं
चश्म-पोशी के सलीक़े थे शिकायात के साथ

तुझ को खो कर भी रहूँ ख़ल्वत-ए-जाँ में तेरी
जीत पाई है मोहब्बत ने अजब मात के साथ

नींद लाता हुआ फिर आँख को दुख देता हुआ
तजरबे दोनों हैं वाबस्ता तिरे हाथ के साथ

कभी तन्हाई से महरूम न रक्खा मुझ को
दोस्त हमदर्द रहे कितने मिरी ज़ात के साथ

जब हवा तक ये कहे नींद को रुख़सत जानो
ऐसे मोसम में जो ख़्वाब आएँ ग़नीमत जानो

जब तक उस सादा क़बा को नहीं छूने पाती
मौज-ए-रंग का पिन्दार सलामत जानो

जिस घरौंदे में हवा आते हुए घबराए
धूप आ जाए तो ये उसकी मुरव्वत जानो

दश्त-ए-ग़ुरबत में जहां कोई शनासा भी नहीं
अब्र रुक जाए ज़रा देर तो रहमत जानो

मुँह पे छिड़काव हो, अंदर से जड़े काटी जाएँ
उसपे इसरार कि इसे ऐ'न मुहब्बत जानो

वरना यूँ तंज का लहजा भी किसे मिलता है
उनका ये तर्ज़-ए-सुख़न ख़ास इनायत जानो

कैसी बेचेहरा रुतें आयीं वतन में अबके
फूल आँगन में खिले हैं न चमन में अबके

बर्फ़ के हाथ ही, हाथ आएँगे ऐ मौज-ए-हवा
हिद्दतें मुझमें न ख़ुशबू के बदन में अबके

धूप के हाथ में जिस तरह खुले ख़ंजर हों
खुरदुरे लहजे की नोकें हैं किरन में अबके

दिल उसे चाहे जिसे अक़्ल नहीं चाहती है
ख़ाना जंगी है अजब ज़ेहन-ओ-बदन में अबके

जी ये चाहे है, कोई फिर तोड़ के रख दे मुझ को
लज़्ज़तें ऐसी कहाँ होंगी थकन में अबके

क्या क्या न ख़्वाब हिज्र के मौसम में खो गए
हम जागते रहे थे मगर बख्त सो गए

उसने पयाम भेजे तो रस्ते में रह गए
हमने जो ख़त लिखे वो हवाबुर्द हो गए

मैं शह्रे-गुल में ज़ख़्म का चेहरा किसे दिखाऊँ
शबनम-ब-दस्त लोग तो काँटे चुभो गए

आँचल में फूल ले के कहाँ जा रही हूँ मैं
जो आने वाले लोग थे, वो लोग तो गए

क्या जानिये उफ़क के उधर क्या तिलिस्म है
लौटे नहीं ज़मीन पे इक बार जो गए

जैसे बदन से क़ौसे-क़ज़ा फूटने लगी
बारिश के हाथ फूल के सब ज़ख़्म धो गए

आँखों में धीरे-धीरे उतर के पुराने गम
पलकों पे नन्हें नन्हें सितारे पिरो गए

वो बचपने की नींद तो अब ख़्वाब हो गई
क्या उम्र थी कि रात हुई और सो गए!

क्या दुःख था, कौन जान सकेगा, निगारे-शब!
जो मेरे और तेरे दुपट्टे भिगो गए!

वैसे तो कज़अदाइ का दुःख कब नहीं रहा
आज उसकी बेरुख़ी ने मगर दिल दुख दिया

मौसम मिज़ाज था, न ज़माना सरिश्त था
मैं अब भी सोचती हूँ, वो कैसे बदल गया

दुःख सबके मुश्तरिक थे मगर हौसले जुदा,
कोई बिखर गया तो कोई मुस्कुरा दिया

झूठे थे सारे फूल जो पेड़ों में आए थे
कोई शिगूफ़ा भी तो समरवर नहीं हुआ

वो चोट क्या हुई कि जो आंसू न बन सकी
वो दर्द क्या हुआ कि जो मिसरा न बन सका

ऐसे भी ज़ख़्म थे कि छुपाते फिरे हैं हम
दरपेश था किसी की करम का मुआमला

आलूद-ए-सुख़न भी न होने दिया उसे
ऐसा भी दुःख मिला जो किसी से नहीं कहा

तेरा ख़्याल करके मैं ख़ामोश हो गयी
वरना ज़बाने-ख़ल्क़ ने क्या क्या नहीं कहा

मैं जानती हूँ मेरी भलाई इसी में थी
लेकिन ये फ़ैसला भी कुछ अच्छा नहीं हुआ

मैं बर्ग-बर्ग उसको नुमू बख़्सती रही
वो डाल-डाल मेरी जड़ें काटता रहा

डसने लगे हैं ख़्वाब मगर किस से बोलिए
मैं जानती थी पाल रही हूँ संपोलिए

बस ये हुआ कि उस ने तकल्लुफ़ से बात की
और हम ने रोते रोते दुपट्टे भिगो लिए

पलकों पे कच्ची नींदों का रस फैलता हो जब
ऐसे में आँख धूप के रुख़ कैसे खोलिए

तेरी बरहना-पाई के दुख बाँटते हुए
हम ने ख़ुद अपने पाँव में काँटे चुभो लिए

मैं तेरा नाम ले के तज़ब्ज़ुब में पड़ गई
सब लोग अपने अपने अज़ीज़ों को रो लिए

ख़ुशबू कहीं न जाए पे इसरार है बहुत
और ये भी आरज़ू कि ज़रा ज़ुल्फ़ खोलिए

तस्वीर जब नई है नया कैनवस भी है
फिर तश्तरी में रंग पुराने न घोलिए

याद क्या आयी कि रोशन हो गए आँसू के घर
जंगलों में शाम उतरी जल उठे जुगनू के घर

रात की रानी का आँचल थम कर चलती हूँ मैं
आज की शब ज़िंदगी मेहमाँ हुई ख़ुशबू के घर

रात में भीगे हुए जंगल का मंजर देखने
शब-गजीदा लोग कैसे जाएँगे जुगनु के घर

क्या अजब जो सर कटे लोगों की परछाईं मिली
शहर में खुलने लगे हैं जा-ब-जा जादू के घर

तुझमें ख्वाहिश थी की गहरी रात का तारा बने
आ कि अब पहले से भी तारीक हैं गेसू के घर

पहले ये मंज़र पढ़ा था सिर्फ़, अब देखा भी है
बाँसुरी बजती रही जलते रहे नीरो के घर

दर्द फिर जागा, पुराना ज़ख़्म फिर ताज़ा हुआ
फ़स्ले-गुल कितने क़रीब आयी है अंदाज़ा हुआ

सुबह यूँ निकली सँवर के जिस तरह कोई दुल्हन
शबनम-आवेज़ा हुई, रंगे-शफ़क़ ग़ाज़ा हुआ

हाथ मेरे भूल बैठे दस्तकें देने का फ़न
बंद मुझपे जबसे उसके घर का दरवाज़ा हुआ

रेल की सीटी में कैसी हिज्र की तमहीद थी
उसको रुख़सत करके घर लौटे तो अंदाज़ा हुआ

याद क्या आएँगे वो लोग, जो आए न गए
क्या पज़ीराइ हो उनकी जो बुलाए न गए

अब वो नींदों का उजड़ना तो नहीं देखेंगे
वही अच्छे थे जिन्हें ख़्वाब दिखाए न गए

रात भर मैंने खुली आँखों से सपना देखा
रंग वो फैले कि नींदों से चुराए न गए

बारिशें रक़्स में थी ज़मीं साकित थी
आ'म था फ़ैज़ मगर रंग कमाए न गए

पर समेटे हुए शाख़ों में परिंदे आकर
ऐसे सोए कि हवा से भी जगाए न गए

तेज बारिश हो, घना पेड़ हो, एक लड़की हो
ऐसे मंज़र कभी शहरों में तो पाए न गए

रोशनी आँख ने पी और सरे-मिज़्गाने-ख़्याल
चाँद वो चमके कि सूरज से बुझाए न गए

गुलाब हाथ में हो आँख में सितारा हो
कोई वजूद मोहब्बत का इस्तिआ'रा हो

मैं गहरे पानी की इस रौ के साथ बहती रहूँ
जज़ीरा हो कि मुक़ाबिल कोई किनारा हो

कभी-कभार उसे देख लें कहीं मिल लें
ये कब कहा था कि वो ख़ुश-बदन हमारा हो

क़ुसूर हो तो हमारे हिसाब में लिख जाए
मोहब्बतों में जो एहसान हो तुम्हारा हो

ये इतनी रात गए कौन दस्तकें देगा
कहीं हवा का ही उस ने न रूप धारा हो

उफ़ुक़ तो क्या है दर-ए-कहकशाँ भी छू आएँ
मुसाफ़िरों को अगर चाँद का इशारा हो

मैं अपने हिस्से के सुख जिस के नाम कर डालूँ
कोई तो हो जो मुझे इस तरह का प्यारा हो

अगर वजूद में आहंग है तो वस्ल भी है
वो चाहे नज़्म का टुकड़ा कि नस्र-पारा हो

नीमख़्वाबी का फुसूँ टूट रहा हो जैसे
आँख का नींद से दिल छूट रहा हो जैसे

रंग फैला था लहू में न सितारा चमका
अबके हर लम्स तेरा झूठ रहा हो जैसे

फिर शफ़क़-रंग हुई कूचा-ए-जानाँ की ज़मीं
आबला पाँवों का फिर फूट रहा हो जैसे

रोशनी पाई नहीं, रात भी बाक़ी है अभी
चाँद से रब्त मगर टूट रहा हो जैसे!

सुर्ख़ बेलें तो सुतूनों में चढ़ी हैं लेकिन
कोई आँगन का सुकूँ लूट रहा हो जैसे!

हवा की धुन पे बन की डाली डाली गाए
कोयल कूके जंगल की हरियाली गाए

रूत वो है जब कोंपल की ख़ुशबू की सुर माँगे
पुरवा के हमराह उमरिया बाली गाए

मोरनी बनकर पुरवा संग मैं जब भी नाचूँ
पुरवा भी बन में होकर मतवाली गाए

रात गए मैं निंदिया खोजने जब भी निकलूँ
कंगन खनके और कानों की बाली गाए

रंग मनाया जाए, ख़ुशबू खेली जाए
फूल हँसें, पत्ते नाचें और माली गाए

मेरे बदन का रुवाँ-रुवाँ इसमें भीगे
यूँ ही नशे में और हवा भोपाली गाए

सजे हुए हैं पलकों पे ख़ुशरंग दीये से
आँख सितारों की छावों दीवाली गाए

हवा के संग चले रह रह के लय बंशी की
जैसे दरिया पार कोई भटियाली गाए

साजन का इसरार कि हम तो गीत सुनेंगे
गोरी चुप है लेकिन मुख की लाली गाए

मुँह से न बोले, नैन मगर मुसकाते जाएँ
उजली धूप न बोलें, रैना काली गाए

धानी बाँके जब भी सुहागन को पहनाए
शोख़ सुरों में क्या क्या चूड़ी बाली गाए

मेहनत की सुंदरता खेतों में फैली है
नर्म हवा की धुन पे धान की बाली गाए

ख़ुद को बिकते देख रही है लेकिन चुप है
मेरी सूरत भोली सूरत वाली गाए

नज़र की तेज़ी में हल्की हँसी की आमेजिश
ज़रा सी धूप में कुछ चाँदनी की आमेजिश

यही तो वजहे-शिकस्ते वफ़ा हुई मेरी
खुलूश-ए-इश्क़ में सदा दिली की आमेज़िश

मेरे लिए तेरे अल्ताफ़ की वो उजली रुत
अज़ाबे-मर्ग में थी ज़िंदगी कि आमेजिश

वो चाँद बनके मेरे जिस्म में पिघलता रहा
लहू में होती गयी रोशनी की आमेज़िश

ये कौन बन में भटकता था, जिसके नाम पे है
हवा-ए-दश्त में आशुफ़्तगी की आमेज़िश

ज़मीं के चेहरे पे बारिश के पहले प्यार के बाद
ख़ुशी के साथ थे हैरानगी की आमेजिश

समंदरों की तरह मेरी आँख साकित है
मगर सुकूत में किस बेकली की आमेज़िश

ख़ुशबू है वो तो छूके बदन को गुज़र न जाए
जबतक मेरे वजूद के अंदर उतर न जाए

ख़ुद फूल ने भी होंठ किये अपने नीम-वा
चोरी तमाम रंग की तितली के सर न जाए

ऐसा न हो कि लम्स बदन की सज़ा बने
जी फूल का हवा की मुहब्बत से भर न जाए

इस ख़ौफ़ से वो साथ निभाने के हक़ है
खोकर मुझे ये लड़की कहीं दुःख से मर न जाए

शिद्दत की नफ़रतों में सदा जिसने साँस ली
शिद्दत का प्यार पाके ख़ला में बिखर न जाए

उस वक्त तक किनारों से नदी चढ़ी रहे
जबतक समंदरों के बदन में उतर न जाए

पलकों को उसकी, अपने दुपट्टे से पोंछ दूँ
कल के सफ़र में आज की गर्द-ए-सफ़र न जाए

मैं किस के हाथ भेजूँ उसे आज की दुआ
क़ासिद, हवा, सितारा, कोई उस के घर न जाए

रंग ख़ुश-बू में अगर हल हो जाए
वस्ल का ख़्वाब मुकम्मल हो जाए

चाँद का चूमा हुआ सुर्ख़ गुलाब
तीतरी देखे तो पागल हो जाए

मैं अँधेरों को उजालूँ ऐसे
तीरगी आँख का काजल हो जाए

दोश पर बारिशें ले के घूमें
मैं हवा और वो बादल हो जाए

नर्म सब्ज़े पे ज़रा झुक के चले
शबनमी रात का आँचल हो जाए

उम्र भर थामे रहे ख़ुश-बू को
फूल का हाथ मगर शल हो जाए

चिड़िया पत्तों में सिमट कर सोए
पेड़ यूँ फैले कि जंगल हो जाए

अपनी ही सदा सुनूँ कहाँ तक
जंगल की हवा रहूँ कहाँ तक

हर बार हवा न होगी दर पर
हर बार मगर उठूँ कहाँ तक

दम घटता है घर में हब्स वो है
ख़ुश्बू के लिए रुकूँ कहाँ तक

फिर आ के हवाएँ खोल देंगी
ज़ख़्म अपने रफ़ू करूँ कहाँ तक

साहिल पे समुंदरों से बच कर
मैं नाम तिरा लिखूँ कहाँ तक

तन्हाई का एक एक लम्हा
हंगामों से क़र्ज़ लूँ कहाँ तक

गर लम्स नहीं तो लफ़्ज़ ही भेज
मैं तुझ से जुदा रहूँ कहाँ तक

सुख से भी तो दोस्ती कभी हो
दुख से ही गले मिलूँ कहाँ तक

मंसूब हो हर किरन किसी से
अपने ही लिए जलूँ कहाँ तक

आँचल मिरे भर के फट रहे हैं
फूल उस के लिए चुनूँ कहाँ तक

दुश्मन है और साथ रहे जान की तरह
मुझमें उतर गया है वो सरतान की तरह

जकड़े हुए है तन को मेरे उसकी आरज़ू
फैला हुआ है जाल सा शिरयान की तरह

दीवार-ओ-दर ने जिसके लिए हिज्र काटे थे
आया था चन्द रोज़ को मेहमान की तरह

दुःख की रुतों में पेड़ ने तनहा सफ़र किया
पत्तों को पहले भेज कर सामान की तरह

गहरे ख़ुनुक अँधेरे में उजले तकलुफ़्फ़ात
घर की फ़िज़ा भी हो गयी शिज़ान की तरह

किता'अ

डूबा हुआ है हुस्न-ए-सुख़न में सुकूत-ए-शब
तारे-रुबाबे-रूह में कल्यान की तरह
आहंग के जमाल की इंजील की दुआ
नरमी में अपने, सूरा-ए-रहमान की तरह

छूने से क़ब्ल रंग के पैकर पिघल गए
मुट्ठी में आ न पाए की जुगनू निकल गए

फैले हुए थे जगती नींदों के सिलसिले
आँखें खुली तो रात के मंज़र बदल गए

कब हिद्दते-गुलाब पे हर्फ़ आने पाएगा
तितली के पर उड़ान की गर्मी से जल गए

आगे तो सिर्फ़ रेत के दरिया दिखाई दें
किन बस्तियों की सम्त मुसाफ़िर निकल गए

फिर चाँदनी के दाम में आने को थे गुलाब
सद शुक्र नींद खोने से पहले संभल गए

चेहरा न दिखा, सदा सुना दे
जीने का ज़रा तो हौसला दे

दिखला किसी तौर अपनी सूरत
आँखो को मज़ीद मत सज़ा दे

छूकर मेरी सोच, मेरे तन में
बेलें हरे रंग की उगा दे

जानाँ न ख़्याल-ए-दोस्ती कर
दे ज़हर जो अब तो तेज सा दे

शिद्दत है मिज़ाज मेरे ख़ूँ का
नफ़रत की भी दे तो इंतहा दे

टूटी हुई शाम मुंतज़िर है
झुक कर मुझे आइना दिखा दे

दिल फटने लगा है ज़ब्त-ए-ग़म से
मालिक कोई दर्द-आश्ना दे

सोयी है अभी तो जाके शबनम
ऐसा न हो मौज-ए-गुल उठा दे

चखूँ ममनुआ ज़ायक़े भी
दिल साँप से दोस्ती बढ़ा दे

दस्ते-शब पे दिखाई क्या देंगी
सिलवटें रोशनी में उभरेंगी

घर की दीवारें मेरे जाने पर
अपनी तन्हाईयों को सोचेंगी

उँगलियों को तराश दूँ, फिर भी
आ'दतन उसका नाम लिखेंगी

रंग-ओ-बू से कहीं पनाह नहीं
ख्वाहिशें भी कहाँ अमाँ देंगी

एक ख़ुशबू से बच भी जाऊँ अगर
दूसरी निकहतें जकड़ लेंगी

ख़्वाब में तितलियाँ पकड़ने को
नींदें बच्चों की तरह दौड़ेंगी

खिड़कियों पे दबीज़ परदें हो
बारिशें फिर भी दस्तकें देंगी

ज़र्रे सरकश हुए, कहने में हवाएँ भी नहीं
आसमानों पे कहीं तंग न हो जाए ज़मीं

आके दीवार पे बैठी थीं की फिर उड़ न साकिन
तितलियाँ बाँझ मनाज़िर में नज़रबंद हुईं

पेड़ की साँसों में चिड़िया का बदन खिंचता गया
नब्ज़ रुकती गयी शाख़ों की रगें खुलती गयीं

टूटकर अपनी उड़ानों से परिंदे आए
साँप की आँखें दरख़्तों पे भी अब उगने लगीं

शाख़ दर शाख़ उलझती हैं रगें पैरों की
साँप से दोस्ती जंगल में न भटकाए कहीं

गोद ले ली है चट्टानों ने समंदर से नमी
झूठे फूलों के दरख़्तों पे भी ख़ुशबूएँ टिकीं

वो जिस से रहा आज तक आवाज़ का रिश्ता
भेजे तो मेरी सोचों को अब अल्फ़ाज़ का रिश्ता

तितली से मेरा प्यार कुछ ऐसे भी बढ़ा है
दोनों में रहा लज़्ज़त-ए-परवाज़ का रिश्ता

सब लड़कियाँ एक दूसरे को जान रहीं हैं
यूँ आ'म हुआ मस्लक-ए-शहनाज़ का रिश्ता

रातों की हवा और मेरे तन की महक में
मुश्तरिका हुआ एक दर-ए-कमबाज़ का रिश्ता

तितली के लबों और गुलाबों के बदन में
रहता है सदा छोटे से एक राज़ का रिश्ता

मिलने से गुरेज़ाँ हैं, न मिलने पे ख़फ़ा भी
दम तोड़ती चाहत है किस अन्दाज़ का रिश्ता

हलक-ए- रंग से बाहर देखूँ
ख़ुद को ख़ुशबू में समो कर देखूँ

उसको बीनाई के अंदर देखूँ
उम्र भर देखूँ कि पल भर देखूँ

किसकी नींदों के चुरा लाई रंग
मौजा-ए-ज़ुल्फ़ को छूकर देखूँ

ज़र्द बरगद के अकेलेपन में
अपनी तन्हाई के मंज़र देखूँ

मौत का ज़ायक़ा लिखने के लिए
चन्द लम्हों को ज़रा मर देखूँ

मुश्तरिका दुश्मन की बेटी

नन्हे से एक चीनी रेस्टोरेंट के अंदर
मैं और मेरी नेशनलिस्ट कुलीग
कीट्स की नज़्मों जैसे दिल-आवेज़ धुँधलके में बैठे
सूप के प्याले से उठते, ख़ुशलम्स महक को
तन की सैराबी में बदलता देख रहीं थीं
बातें "हवा नहीं पढ़ सकती", ताजमहल, मैसूर के रेशम
और बनारस की साड़ी के ज़िक्र से झिलमिल करती
पाक-ओ-हिन्द सियासत तक आ निकलीं
पैंसठ--उसके बाद एकहत्तर--जंगी क़ैदी
अमृतसर का टीवी
पाकिस्तानी कल्चर-- महाज़े-नौ—ख़तरे की घण्टी

मेरी जोशीली कूलिग्स
इस हमले पे बहुत ख़फ़ा थीं
मैंने कुछ कहना चाहा तो
उनके मुँह यूँ बिगड़ गए थे
जैसे सूप के बदले उन्हें कुनैन का रस पीने को मिला हो
रेस्टौरेंट के मालिक़ की हँसमुख बीबी भी
मेरी तरफ़ शाक़ी नज़रों से देख रही थी
(शायद सन बासठ का कोई तीर अभी तक उसके दिल में तराज़ू था!)

रेस्टौरेंट के नर्ख में जैसे
हाई ब्लड प्रेशर इंसाँ के जैसी झल्लाहट दर आयी थी
ये कैफ़ियत कुछ लम्हे रहती
तो हमारे ज़ेहनों की शिरयानें फट जातीं
लेकिन उस पल ऑर्कस्ट्रा ख़ामोश हुआ

और लता की रस टपकाती, शहद-आगीं आवाज़, कुछ ऐसे उभरी
जैसे हब्सज़दा कमरे में
दरिया के रुख़वाली खिड़की खुलने लगी हो!
मैंने देखा
जिस्मों और चेहरों के तनाव पर
अनदेखे हाथों की ठण्डक
प्यार की शबनम छिड़क रही थी
मस्ख़शुदा चेहरे जैसे फिर सँवर रहे थे
मेरे नैशनलिस्ट कूलिग्स
हाथों के प्यालों में अपनी ठोढियाँ रखे
साकित-ओ-जामिद बैठीं थीं
गीत का जादू बोल रहा था!

मेज़ के नीचे
रेस्टौरेण्ट के मालिक़ की हँसमुख बीबी के
नर्म गुलाबी पाँव भी
गीत की हमराही में थिरक रहे थे!

मुश्तरिका दुश्मन की बेटी
मुश्तरिका महबूब की सूरत
उजले रेशम लहजों की बाहें फैलाए
हमें समेटे
नाच रही थी!

बारिश हुई तो फूलों के तन चाक हो गए
मौसम के हाथ भीग के सफ़्फ़ाक हो गए

बादल को क्या ख़बर है कि बारिश की चाह में
कैसे बुलंद-ओ-बाला शजर ख़ाक हो गए

जुगनू को दिन के वक़्त परखने की ज़िद करें
बच्चे हमारे अहद के चालाक हो गए

लहरा रही है बर्फ़ की चादर हटा के घास
सूरज की शह पे तिनके भी बेबाक हो गए

बस्ती में जितने आब-गज़ीदा थे सब के सब
दरिया के रुख़ बदलते ही तैराक हो गए

सूरज-दिमाग़ लोग भी अबलाग़-ए-फ़िक्र में
ज़ुल्फ़-ए-शब-ए-फ़िराक़ के पेचाक हो गए

जब भी ग़रीब-ए-शहर से कुछ गुफ़्तुगू हुई
लहजे हवा-ए-शाम के नमनाक हो गए

क्या डूबते हुवों की सदाएँ समेटतीं
सैलाब की समा'अतें आँधीं को रहन थीं

काई की तरह लाशें चट्टानों पे उग गयीं
जरख़ेज़ियों से अपनी परेशान थी जमीं

पेड़ों का ज़र्फ़ वो की जड़ें तक निकाल दें
पानी की प्यास ऐसी कि बुझती न थी कहीं

बच्चों के ख़्वाब पी के भी हलक़ोम ख़ुश्क थे
दरिया की तिशनगी में बड़ी वहशतें रहीं

बारिश के हाथ चूम रहे बस्तियों से ख़्वाब
नींदें हवाए-तुंद की मौजों को भा गयीं

मलबे से हर मकान के, निकले हुए थे हाथ
आँधीं को थामने की बड़ी कोशिश हुईं

तावीज़ वाले हाथ मगरमछ के पास थे
तह से दुआ लिखी हुई पेशानियाँ मिलीं

मौजों के साथ साँप भी फुफकारने लगे
जंगल की दहशतें भी समंदर से मिल गयीं

बस रक़्स पानियों का था वहशत के राग पे
दरिया को सब धुनें तो हवाओं ने लिख के दीं

समा के अब्र में, बरसात की उमंग में हूँ
हवा के जज़्ब हूँ, ख़ुशबू के अंग-अंग में हूँ

फ़िज़ा में तैर रही हूँ, हवा के रंग में हूँ
लहू से पूछ रही हूँ, ये किस तरंग में हूँ

धनक उतरती नहीं मेरे ख़ून में जबतक
मैं अपने जिस्म की नीली रगों से जंग में हूँ

बहार ने मेरे आँखों पे फूल बांध दिए!
रिहाई पाऊँ तो कैसे, हिसार-ए-रंग में हूँ

खुली फ़िज़ा है, खुला आसमाँ भी सामने है
मगर ये डर नहीं जाता अभी सुरंग में हूँ

हवा-गज़ीदा बनफ़्शे के फूल के मानिंद
पनाह-ए-रंग से बचकर, पनाह-ए-संग में हूँ

सदफ़ में उतरूँ तो फिर मैं गुहर भी बन जाऊँ
सदफ से पहले मगर हल्क़-ए-निहंग में हूँ

रात के ज़हर से रसीले हैं
सुबह के होंठ कितने नीले हैं!

रेत पे तैरते जज़ीरे मिलें
पानियों पे हवा के टीले हैं

रेज़गी का अज़ाब सहना है
ख़ौफ़ से सारे पेड़ पीले हैं

हिज्र, सन्नाटा, पिछले पहर का चाँद
ख़ुद से मिलने के कुछ वसीले हैं

दस्ते-ख़ुशबू करे मसीहाई
नाख़ुन-ए-गुल ने ज़ख़्म छीले है

इश्क़ सूरत से वो भी फ़रमाएँ
जो शबे-तार के रखीले हैं

ख़ुशबूएँ फिर बिछड़ न जाएँ कहीं
अभी आँचल हवा के गीले हैं

खिड़की दरिया के रुख़ पे जब से खुली
फ़र्श कमरों के सीले-सीले हैं

ज़मीं के हल्क़े से निकला तो चाँद पछताया
कशिश बिछाने लगा है हर अगला सय्यारा

मैं पानियों की मुसाफ़िर, वो आसमानों का
कहाँ से रब्त बढ़ाएँ कि दरमियान है ख़ला

बिछड़ते वक्त अगरचे दिलों को दुःख तो हुआ
खुली फ़िज़ा में मगर साँस लेना अच्छा लगा

जो सिर्फ़ रूह था, फ़ुरक़त में भी विसाल में भी
उसे बदन के असर से रिहा तो होना था

गए दिनों में जो था ज़हन-ओ-जिस्म की लज़्ज़त
वही विसाल तबियत का जब्र बनने लगा

चली है थाम के बदल के हाथ को ख़ुशबू
हवा के साथ सफ़र का मुक़ाबिल ठहरा!

बरस सके तो बरस जाए इस घड़ी वरना
बिखेर डालेगी बादल के सारे ख़्वाब हवा

मैं जुगनुओं की तरह रात भर का चाँद हुई
ज़रा सी धूप निकल आयी और माँद हुई

हुदूद-ए-रक़्स से आगे निकल गयी थी कभी
सो मोरनी की तरह उम्र भर को राँद हुई

महे-तमाम! अभी छत पे कौन आया था
कि जिसके आगे तेरी रोशनी भी माँद हुई

टके का चारा न गइयाँ को ज़िंदगी में दिया
जो मर गयी है तो सोने के मोल नाँद हुई

न पूछ, क्यूँ उसे जंगल की रात अच्छी लगी
वो लड़की जो की कभी तेरे घर का चाँद हुई

अब कौन से मौसम से कोई आस लगाए
बरसात में भी याद न जब उनको हम आए

मिट्टी की महक साँस की ख़ुशबू में उतर कर
भीगे हुए सब्ज़े की तराई में बुलाए

दरिया की तरह मौज में आयी हुई बरखा
ज़र्दाई हुई रूत को हरा रंग पिलाए

बूँदों की छमाछम से बदन काँप रहा है
और मस्त हवा रक़्स की लौ तेज़ किए जाए

शाखें हैं तो वो रक़्स में, पत्ते हैं तो रम में
पानी का नशा है कि दरख़्तों को चढ़ा जाए

हर लहर के पाँवों से लिपटने लगे घुँघरू
बारिश की हँसी ताल पे पाज़ेब जो छनकाए

अंगूर की बेलों पे उतर आए सितारे
रुकती हुई बारिश ने भी क्या रंग दिखाए

हमारे अहद में शायर के नख़्ल क्यूँ ना बढ़े
अमीरे-शहर को लाहक़ हुई सुख़नफ़हमी

सरगोशी-ए-बहार से ख़ुशबू के दर खुले
किस इस्म के जमाल से बाबे-हुनर खुले

जब रंग पा-ब-गिल हों, हवाएँ भी क़ैद हो
क्या उस फ़िज़ा में परचम-ए-ज़ख़्म-ओ-जिगर खुले

ख़ेमे से दूर, शाम ढले, अजनबी जगह
निकली हूँ किसकी खोज में बेवक़्त सर खुले

शायद कि चाँद भूल पड़े रास्ता कभी
रखते हैं इस उम्मीद पे कुछ लोग घर खुले

वो मुझसे दूर, ख़ुश है? ख़फ़ा है? उदास है?
किस हाल में है? कुछ तो मेरा नामाबर खुले

हर रंग में वो शख़्स नज़र को भला लगा
हद ये- कि रूठ जाना भी उस शोख़ पर खुले

खुल जाए किन हवाओं से रस्म-ए-बदनरही
ख़ल्वत में फूल में कभी तितली अगर खुले

रातें तो क़ाफ़िलों की मइ'यत में काट लें
जब रोशनी बँटी तो कई राहबर खुले

हवा से ज़ंग में हूँ, बेअमाँ हूँ
शिकस्ता कश्तियों पर बादबाँ हूँ

मैं सूरज की तरह हूँ धूप ओढ़े
और अपने आप पर ख़ुद सायबाँ हूँ

मुझे बारिश की चाहत ने डुबोया
मैं पुख़्ता शहर का कच्चा मकाँ हूँ

खुद अपनी चाल उल्टी चलना चाहूँ
मैं अपने वास्ते खुद आसमान हूँ

दुआएँ दे रही हूँ दुश्मनों को
और एक हमदर्द पे नामेह्रबाँ हूँ

परिंदों को दुआ सिखला रही हूँ
मैं बस्ती छोड़, जंगल की अज़ाँ हूँ

अभी तस्वीर मेरी क्या बनेगी
अभी तो कैनवस पे एक निशाँ हूँ

कहाँ आराम लम्हा भर रहा है
सफ़र मेरा तआकुब कर रहा है

रही हूँ बे-अमाँ मौसम की ज़द पर
हथेली पर हवा की सर रहा है

मैं एक नौज़ायदा चिड़िया हूँ लेकिन
पुराना बाज़ मुझसे डर रहा है

पज़ीराइ को मेरी शह्रे-गुल में
सबा के हाथ में पत्थर रहा है

हवाएँ छू के रस्ता भूल जाएँ
मेरे तन में कोई मन्तर रहा है

मैं अपने आप को डँसने लगी हूँ
मुझे अब ज़हर अच्छा कर रहा है

खिलौने पा लिए हैं मैंने लेकिन
मेरे अंदर का बच्चा मर रहा है !

न क़र्ज़े नाख़ुने गुल नाम को लूँ
हवा हूँ, अपनी गिरहें आप खोलूँ

तेरी ख़ुशबू बिछड़ जाने से पहले
मैं अपने आप में तुझको समो लूँ

खुली आँखों से सपने क़र्ज़ लेकर
तेरी तनहाइयों में रंग घोलूँ

मिलेगी आंसुओं से तन को ठण्डक
बड़ी लू है, ज़रा आँचल भिगो लूँ

वो अब मेरी ज़रूरत बन गया है
कहाँ मुमकिन रहा, उससे न बोलूँ

मैं चिड़िया की तरह दिन भर थकी हूँ
हुई है शाम तो कुछ देर सो लूँ

चलूँ मक़तल से अपने शाम, लेकिन
मैं पहले अपने प्यारों को तो रो लूँ

मेरा नौहा-कुनाँ कोई नहीं है
सो अपने सोग में ख़ुद बाल खोलूँ

उम्र भर के लिए अब तो सोयी की सोयी ही मासूम शहज़ादियाँ रह गयीं
नींद चुनते हुए हाथ ही थक गए, वो भी जब आँख की सुइयाँ रह गयीं

लोग गलियों से होकर गुजरते रहे, कोई ठिठका, न ठहरा, न वापस हुआ
अधखुली खिड़कियों से लगीं, शाम से राह तकती हुई लड़कियाँ रह गयीं

पाँव छूकर पुजारी अलग हो गए, नीम तारीक मंदिर की तन्हाई में
आग बनती हुई तन की नौख़ेज़ ख़ुशबू समेटे हुए देवियाँ रह गयीं

वो हवा थी कि कच्चे मकानों की छत उड़ गयी, और मकीं लापता हो गए
अब तो मौसम के हाथों (ख़िज़ाँ में) उजड़ने को बस ख़्वाब की बस्तियाँ रह गयीं

आख़िरे-कार लो वो भी रुख़सत हुआ, सारी सखियाँ भी अब अपने घर की हुईं
ज़िंदगी भर को फ़नकार से गुफ़्तगू के लिए सिर्फ़ तनहाइयाँ रह गयीं

शह्रे-गुल में हवाओं ने चारों तरफ़ इस क़दर रेशमी ज़ाल फैला दिए
थरथराते परों में शिकस्ता उड़ाने समेटे हुए तितलियाँ रह गयीं

अजनबी शह्र की अव्वलीं शाम ढलने लगी, पुर्सा देने जो आए--गए
जलते ख़ेमों की बुझती हुई राख पर बाल खोले हुए बीवियाँ रह गयीं

जाने फिर अगली सदा किसकी थी
नींद ने आँख पे दस्तक दी थी

मौज दर मौज सितारे निकले
झील में चाँद किरन उतरी थी

परियाँ आयी थीं कहानी कहने
चाँदनी रात ने लौ दे दी थी

बात ख़ुशबू की तरह फैली थी
पैरहन मेरा शिकन तेरी थी

आँख को याद है वो पल अब भी
नींद जब पहले पहल लौटी थी

इश्क़ तो खैर था अंधा लड़का
हुस्न को कौन सी मजबूरी थी

क्यों वो बेसम्त हुआ जब मैंने
उसके बाज़ू पे दुआ बाँधी थी

दुख नविश्ता है तो आँधी को लिखा आहिस्ता
ऐ ख़ुदा अब के चले ज़र्द हवा आहिस्ता आहिस्ता

ख़्वाब जल जाएँ मेरी चश्म-ए-तमन्ना बुझ जाए
बस हथेली से उड़े रंग-ए-हिना आहिस्ता

ज़ख़्म ही खोलने आई है तो उजलत कैसी
छू मेरे जिस्म को ऐ बाद-ए-सबा आहिस्ता

टूटने और बिखरने का कोई मौसम हो
फूल की एक दुआ मौज-ए-हवा आहिस्ता

जानती हूँ कि बिछड़ना तेरी मज़बूरी है
पर मेरी जान मिले मुझ को सज़ा आहिस्ता

मिरी चाहत में भी अब सोच का रंग आने लगा
और तेरा प्यार भी शिद्दत में हुआ आहिस्ता

नींद पर जाल से पड़ने लगे आवाज़ों के
और फिर होने लगी तेरी सदा आहिस्ता

रात जब फूल के रुख़्सार पे धीरे से झुकी
चाँद ने झुक के कहा और ज़रा आहिस्ता

मंज़र है वही ठिठक रही हूँ
हैरत से पलक झपक रही हूँ

ये तू है कि मेरा वाहेमा है!
बंद आँखों से तुझ को तक रही हूँ

जैसे के कभी न था ता'रुफ़
यूँ मिलते हुए झिझक रही हूँ

पहचान! मैं तेरी रोशनी हूँ
और तेरी पलक पलक रही हूँ

क्या चैन मिला है--सर जो उस के
शानों पे रखे सिसक रही हूँ

पत्थर पे खिली, पे चश्मे गुल में
काँटे की तरह खटक रही हूँ

जुगनू कहाँ थक के गिर चुका है
जंगल में कहाँ भटक रही हूँ

गुड़िया मेरी सोच की छिन सका
बच्ची की तरह बिलक रही हूँ

इक उम्र हुई है ख़ुद से लड़ते
अंदर से तमाम थक रही हूँ

रस फिर से जड़ों में जा रहा है
मैं शाख़ पे कब से पक रही हूँ

तख़लीक-ए-जमाल-ए-फ़न का लम्हा!
कलियों की तरह चटक रही हूँ

ढूँढा किए हाथ जुगनुओं के
मेले से बिछड़ के आंसुओं के

एक रात खिला था उसका वादा
आँगन में हुजूम ख़ुशबुओं के

शहरों से हवा जो होके आयी
रम छनने लगे हैं आहुओं के

किस बात पे कायनात ताज दें
खुलते नहीं भेद साधुओं के

तनहा मेरी ज़ात दस्ते-शब में
इतराफ में ख़ेमे बद-दुओं के

ये बोल हवा के लब पे हैं--या
मन्तर हैं क़दीम जादुओं के

अब क्या है जो तेरे पास आऊँ
किस मान पे तुझको आज़माऊँ

ज़ख़्म अबके तो सामने से खाऊँ
दुश्मन से न दोस्ती बढ़ाऊँ

तितली की तरह जो उड़ चुका है
वो लम्हा कहाँ से खोज लाऊँ

गिरवी हैं समा'अतें भी अब तो
क्या तेरी सदा को मुँह दिखाऊँ

ऐ मेरे लिए न दुखने वाले
कैसे तेरे दुःख समेट लाऊँ

यूँ तेरी शिनाख़्त मुझमें उतरे
पहचान तक अपनी भूल जाऊँ

तेरे ही भले को चाहती हूँ
मैं तुझको कभी न याद आऊँ

क़ामत से बड़ी सलीब पाकर
दुःख को क्योकर गले लगाऊँ

दीवार से बेल बढ़ गयी है
फिर क्यूँ न हवा में फैल जाऊँ

मन थकने लगा है तन समेटे
बारिश की हवा में बन समेटे

ऐसा न हो, चाँद भेद पा ले
पैराहने-गुल शिकन समेटे

सोती रही आँख दिन चढ़े तक
दुल्हन की तरह थकन समेटे

गुज़ारा है चमन से कौन ऐसा
बैठी है हवा से बदन समेटे

शाख़ों ने कली को बद-दुआ दी
बारिश तेरा भोलपन समेटे

आँखों के तवील रतजगों पर
चाँद आया भी तो गहन समेटे

अहवाल मेरा वो पूछता था
लहजे में बड़ी चुभन समेटे

अन्दर से शिकस्ता वो भी निकला
लेकिन वही बाँकपन समेटे

शाम आए तो हम भी घर को लौटें
चिड़ियों की तरह थकन समेटे

खुद से जंग दस्तकश थे हम लोग
जज़्बात में एक रन समेटे

आँखों के चराग़ हम बुझा दें
सूरज भी मगर किरन समेटे

किस प्यार से मिल रहे हैं कुछ लोग
चमकीले बदन में फन समेटे

फिर होने लगी हूँ रेज़ा-रेज़ा
आए मुझे मेरा फ़न समेटे

ग़ैरों के लिए बिखर गयी थी
अब मुझको मेरा वतन समेटे

फूल आए न बर्ग़ तर ही ठहरे
दुःख पेड़ कि बेसमर ही ठहरे

हैं बहुत तेज हवा के नाखून
ख़ुशबू से कहो कि घर ही ठहरे

कोई तो बने ख़िज़ाँ का साथी
पत्ता न सही, शजर तो ठहरे

इस शहरे सुख़नफ़रोशरगाँ में
हम जैसे तो बेहुनर ही ठहरे

अनचखी उड़ान की क़ीमत
आख़िर मेरे बालो-पर ही ठहरे

रोगन से चमक उठे तो मुझसे
अच्छे मेरे बामो-दर ही ठहरे

कुछ देर को आँख रंग छू ले
तितलियों पे अगर नज़र ही ठहरे

वो शह्र में है, यही बहुत है
किसने कहा, मेरे घर ही ठहरे

चाँद उसके नगर में क्या रुका है
तारे भी तमाम उधर ही ठहरे

हम ख़ुद ही थे सोख़्ता मुक़द्दर
हाँ! आप सितारागर ही ठहरे

मेरे लिए मुंतज़िर हो वो भी
चाहे सरे-रहगुज़र ही ठहरे

पाजेब से प्यार था, सो मेरे
पावों में सदा भँवर ही ठहरे

अब कैसी परदादारी ख़बर आम हो चुकी
माँ की रिदा तो दिन हुए नीलाम हो चुकी

अब आसमाँ से चादरे-शब आए भी तो क्या
बेचादरी ज़मीन पे इल्ज़ाम हो चुकी

उजड़े हुए दयार पे फिर क्यूँ निगाह है
इस किश्त पे तो बारिशे-इकराम हो चुकी

सूरज भी उसको ढूँढ के वापस चला गया
अब हम भी घर को लौट चलें शाम हो चुकी

शिमले सम्भालते ही रहे मस्लहत पसन्द
होना था जिसको प्यार में बदनाम हो चुकी

आँखे हैं और सुबह तलक तेरा इंतेज़ार
मश'अल बदस्त रात तेरे नाम हो चुकी

कोहे-निदा से भी सुख़न उतरे अगर तो क्या
नासमि'यों में हुर्मते-इलहाम हो चुकी!

पानी पर भी ज़ादे-सफ़र में प्यास तो लेते हैं
चाहने वाले एक दफ़ा बनबास तो लेते हैं

एक ही शह्र में रहकर जिनको इज़्ने-दीद न हो
यही बहुत है एक हवा में सान त लेते है

रस्ता कितना देखा हुआ हो, फिर भी शाहसवार
ऐड़ लगाकर अपने हाथ में रास तो लेते हैं

फिर आँगन दीवारों की ऊँचाई में गुम होंगे
पहले पहले घर अपनों के पास तो लेते हैं

यही ग़नीमत है कि बच्चे ख़ाली हाथ नहीं हैं
अपने पुरखों से दुःख की मीरास तो लेते हैं

जगा सके न तिरे लब लकीर ऐसी थी
हमारे बख़्त की रेखा भी 'मीर' ऐसी थी

ये हाथ चूमे गए फिर भी बे-गुलाब रहे
जो रुत भी आई ख़िज़ाँ की सफ़ीर ऐसी थी

वो मेरे पाँव को छूने झुका था जिस लम्हे
जो माँगता उसे देती अमीर ऐसी थी

शहादतें मिरे हक़ में तमाम जाती थीं
मगर ख़मोश थे मुंसिफ़ नज़ीर ऐसी थी

कतर के जाल भी सय्याद की रज़ा के बग़ैर
तमाम उम्र न उड़ती असीर ऐसी थी

फिर उस के बाद न देखे विसाल के मौसम
जुदाइयों की घड़ी चश्म-गीर ऐसी थी

बस इक निगाह मुझे देखता चला जाता
उस आदमी की मोहब्बत फ़क़ीर ऐसी थी

रिदा के साथ लुटेरे को ज़ाद-ए-रह भी दिया
तिरी फ़राख़-दिली मेरे वीर ऐसी थी

न सर को फोड़ कि तू मर सका तो क्या शिकवा
वफ़ा-शिआर कहाँ मैं भी हीर ऐसी थी

कभी न चाहने वालों का ख़ूँ-बहा माँगा
निगार-ए-शहर-ए-सुख़न बे-ज़मीर ऐसी थी

मेरे छोटे से घर को ये किसकी नज़र, ऐ ख़ुदा! लग गयी
कैसी कैसी दुआओं के होते हुवे बद्दुआ लग गयी

एक बाज़ू बुरीदा शिकस्ता बदन क़ौम के बाब में
ज़िंदगी का यक़ीं किसको था, बस ये कहिए, दवा लग गयी

झूठ के शह्र में आइना क्या लगा, संग उठाए हुए
आइनासाज़ की खोज में जैसे ख़ल्क़े -ख़ुदा लग गयी

जंगलों के सफ़र में तो आसेब से बच गयी थी मगर
शह्र वालों में आते ही पीछे ये कैसी बला लग गयी

नीम तारीक तन्हाई में सुर्ख़ फूलों का बन खिला उठा
हिज्र की ज़र्द दीवार पे तेरी तस्वीर क्या लग गयी

वो जो पहले गए थे, हमें उनकी फ़ुर्क़त ही कुछ कम न थी
जान! क्या तुझको भी शह्रे-नामेहरबाँ की हवा लग गयी?

दो कदम चल के ही छाँव की आरज़ू सर उठाने लगी
मेरे दिल को भी शायद तेरे हौसलों की हवा लग गयी

मेज़ से जाने वालों की तस्वीर कब हट सकी थी मगर!
दर्द भी जब थमा, आँख भी जब ज़रा लग गयी!

वही परिंद कि कल गोशागीर ऐसा था
पलक झपकते हवा में लकीर ऐसा था

उसे तो दोस्त के हाथों की सूझ बुझ भी थी
ख़ता न होता किसी तौर; तीर ऐसा था

पयाम देने का मौसम न हमनवा पाकर
पलट गया दबे पाओं, सफ़ीर ऐसा था

किसी भी शाख़ के पीछे पनाह लेती मैं
मुझे वो तोड़ ही लेता शरीर ऐसा था

हँसी के रंग बहुत मेहरबान थे लेकिन
उदासियों से ही निभती, ख़मीर ऐसा था

तेरा कमाल कि पाओं में बेड़ियाँ डालीं
ग़ज़ाले-शौक़ कहाँ का असीर ऐसा था!

गोरी करत सिंगार

बाल बाल मोती चमकाए
रोम रोम महकार
माँग सिंदूर की सुन्दरता से
चमके चन्दन वार
जूड़े में जूहे की बीनी
बाँह में हार सिंगार
कान में जगमग बाली पत्ता
गले में जुगनू हार
संदल ऐसी पेशानी पर
बिन्दिया लाई बहार
सब्ज़ कटारा सी आँखों में
कजरे की दो धार
गालों की सुर्ख़ी में झलके
हिरदै का इक़रार
होंठ पे कुछ फूलों की लाली
कुछ साजन के कार
कसा हुवा केसरी शलो का
चुनरी धारीदार
हाथों की एक-एक चूड़ी में
मोहन की झनकार
सहज चले फिर भी पायल में
बोले पी का प्यार
अपना आप दर्पण में देखे
और शरमाए नार
नार के रूप को अंग लगाए
धड़क रहा संसार

तितलियों की बेचैनी, आ बसी है पाओं में
एक पल को छाँव में, और फिर हवाओं में

जिनके खेत और आँगन एक साथ उजड़ते हैं
कैसे हौसले होंगें उन गरीब माओं में

सूरते-रफू करते, सर न यूँ खुला रखते
जोड़ कब नहीं होते माओं की रिदाओं में

आँसुओं में कट-कट कर कितने ख़्वाब गिरते हैं
एक जवान की मइ'यत आ रही है गाँओं में

अब तो टूटी कश्ती भी आग से बचाते हैं
हाँ! कभी था नाम अपना बख़्त आज़माओं में

अब्र की तरह है वो यूँ न छू सकूँ लेकिन
हाथ जब भी फैलाए आ गया दुआओं में

जुगनुओं की शम्मे भी रास्तों में रोशन हैं
साँप ही नहीं होते ज़ात की गुफाओं में

सिर्फ़ इस तकब्बुर में उसने मुझको जीता था
ज़िक्र हो न उसका भी कल को नारसाओं में

कूच की तमन्ना में पाँव थक गए लेकिन
सम्त तय नहीं होती प्यारे रहनुमाओं में

अपनी ग़मगुसारी को मुश्तहिर नहीं करते
इतना ज़र्फ़ होता है दर्द आशनाओं में

अब तो हिज्र के दुःख में सारी उम्र जलना है
पहले क्या पनाहें थीं मेह्बाँ चिताओं में

साज़ो-रख़्त भिजवा दें हद्दे-शह्र से बाहर
फिर सुरंग डालेंगे हम महल सराओं में

शौक़-ए-रक़्स से जब तक उँगलियाँ नहीं खुलतीं
पाँव से हवाओं के बेड़ियाँ नहीं खुलतीं

पेड़ को दुआ दे कर कट गई बहारों से
फूल इतने बढ़ आए खिड़कियाँ नहीं खुलतीं

फूल बन के सैरों में और कौन शामिल था
शोख़ी-ए-सबा से तो बालियाँ नहीं खुलतीं

हुस्न के समझने को उम्र चाहिए जानाँ
दो घड़ी की चाहत में लड़कियाँ नहीं खुलतीं

कोई मौजा-ए-शीरीं चूम कर जगाएगी
सूरजों के नेज़ों से सीपियाँ नहीं खुलतीं

माँ से क्या कहेंगी दुख हिज्र का कि ख़ुद पर भी
इतनी छोटी उम्रों की बच्चियाँ नहीं खुलतीं

शाख़-शाख़ सरगर्दां किस की जुस्तुजू में हैं
कौन से सफ़र में हैं तितलियाँ नहीं खुलतीं

आधी रात की चुप में किस की चाप उभरती है
छत पे कौन आता है सीढ़ियाँ नहीं खुलतीं

पानियों के चढ़ने तक हाल कह सकें और फिर
क्या क़यामतें गुज़रीं बस्तियाँ नहीं खुलतीं

मिट्टी की गवाही ख़ूँ से बढ़कर
आयी है अजब घड़ी वफ़ा पर

किस ख़ाक की कोंख से जनम लें
आए हैं जो अपने बीज खोकर

काँटा भी यहाँ का बर्गे-तर है
बाहर की कली बबूल थूहर

क़लमों से लगे हुए शजर हम
पल भर में हो किस तरह हों समरवर

कुछ पेड़ ज़मीन चाहते हैं
बेलें तो नहीं उगीं हवा पर

इस नस्ल का ज़ेहन कट रहा है
गलों ने कटाए थे फ़क़त सर

पत्थर भी बहुत हसीं हैं लेकिन
मिट्टी से ही बन सकेंगे कुछ घर

हर इश्क़ गवाह ढूँढता है
जैसे कि नहीं यक़ीन ख़ुद पर

बस उनके लिए नहीं जज़ीरा
पैराए जो खोलते समन्दर

नज़्रे हज़रत अमीर खुसरो

(पूरबी)

परदेसी कब आओगे?

सूरज डूबा शाम हो गयी
तन में चंबेली फूली
मन में आग लगाने वाले
मैं कब तुझको भूली

कबतक आँख चुराओगे?
परदेसी, कब आओगे?

साँझ की छाँव में तेरी छाया
ढूँढती जाए दासी
भरे माघ में खोजे तुझको
तिन दर्शन की प्यासी

जीवन भर तरसाओगे
परदेसी, कब आओगे?

भैरों ठाठ ने अंग बनाया
वादी सुर—गंधार
समवादी को निखार रंग दे
शुद्ध मद्धम सिंगार

तुम कब तिलक लगाओगे?
परदेसी, कब आओगे?

हाथ का फूल, गले की माला
माँग का सुर्ख़ सिंदूर
सबके रंग हैं फैले पुराने
साजन जब तक दूर

रूप न मेरा सजाओगे?
परदेसी, कब आओगे?

हर आहट पर खिड़की खोली
हर दस्तक पर आँख
चाँद न मेरे आँगन उतरा
सपने हो गए राख

सारी उम्र जलाओगे?
परदेसी, कब आओगे?

एक बुरी औरत

वो अगरचे मुतरिबा है
लेकिन उसके दाम-ए-सौत से ज़्यादा
शह्र उसके जिस्म का असीर है
वो आग में गुलाब गुँथकर कमाले-आज़री से पहलवी तराश पाने वाला जिस्म
जिसको आफ़ताब की किरन जहाँ से चूमती है
रंग की फ़ुवार फूटती है!
उसके हुस्ने-बेपनाह की चमक
किसी क़दीम लोक-दास्तान के जमाल की तरह
तमाम उम्र ला-शऊर को असीरे-रंग रखती है!
गए ज़मानों में किसी परी को मुड़ के देखने से लोग
बाक़ी उम्र क़ैद-ए-संग काटते थे
याँ—सज़ा बेबाज़दीद आग है!
ये आज़माइशे-शकेबे-नासहाँ-ओ-इम्तिहाने-ज़ूह्दे-वाइज़ाँ
दरीचा-ए-मुराद खोल कर ज़रा झुके
तो शह्रे-आशिक़ाँ के सारे सब्ज़ ख़त
ख़ुदा-ए-तन से,
शब-'इज़ार होने की दुआ करें
जवाँ लहू का ज़िक्र क्या
ये आतिशा तो
पीरे-सालख़ुर्दा को सुब्हख़ेज़ कर दे

शहर उसके दिलकशी के बोझ से चटक रहा है
क्या अजीब हुस्न है,
कि जिससे डर से माएँ अपनी कोख जाइयों को,

कोढ़ सुरती की बद-दुआएँ दे रही हैं
कुवारियाँ तो तो क्या
कि खेली खायी औरतें भी जिसके साये से पनाह माँगती हैं
ब्याहता दिलों में उसका हुस्न ख़ौफ़ बनके यूँ धड़कता है
कि घर के मर्द शाम तक न लौट आएँ तो
वफ़ा-शिआर बीबियाँ दुआ-ए-नूर पढ़ने लगती हैं!

कोई बरस नहीं गया,
कि उसके क़ुर्ब की सज़ा में
शह्र की सहीक़दाँ
न क़ामते-सलीब की क़बा हुए
वो नह्र जिसपे हर सहर ये ख़ुशजमाल बाल धोने जाती है
उसे फ़क़ीहे-शह्र ने नजिस क़रार दे दिया
तमाम नेक मर्द उससे ख़ौफ़ खाते हैं
अगर बकारे-ख़ुशरवी
कभी किसी को उसकी राँद-ए-जहाँ गली से होके जाना हो
तो सब कुलाहदार,
अपनी इस्मतें बचाए यूँ निकलते हैं
कि जैसे उस गली की सारी खिड़कियाँ
ज़नाने-मिस्र की तरह से
उनके पिछले दामनों को खिंचने लगी हैं

ये गयी अमावसों का ज़िक्र है
कि एक शाम घर को लौटते हुए मैं रास्ता भटक गयी
मेरी तलाश मुझको जंगलों में लाके ठक गयी
मैं राह खोजती ही राह गयी
इस इब्तिला में सब्ज़-चश्म हो चुका था
जुगनुओं से क्या उम्मीद बाँधती
मुहीब शब हिरास बनके जिस्मो-जाँ पे इस तरह उतर रही थी
जैसे मेरे रोएँ-रोएँ में

किसी बला का हाथ सरसरा रहा हो
ज़िंदगी में—ख़ामोशी से इतना डर कभी नहीं लगा!

कोई परिंदा पाँव भी बदलता था तो नब्ज़ डूब जाती थी
मैं एक आस्माँ-चशीदा पेड़ के सियाह तने से सर टिकाए
ताज़ा पत्ते की तरह लरज़ रही थी
नागहाँ किसी घनेरी शाख़ को हटाके
रोशनी की दो अलाव यूँ दहक उठे
कि उनकी आँच मेरे नाख़ूनों तक आ रही थी।

एक जस्त--
और क़रीब था कि हाँपती हुई बला
मेरी रगे-गुलू में अपने दाँत गाड़ती
कि दफ़’अतन किसी दरख़्त के अक़ब में चूड़ियाँ बजीं
लिबासे-शब की सलवटों चरमराए ज़र्द पत्तों की हरी कहानियाँ लिए
विसाले-तिश्ना ला गुलाल आँख में
लबों पे वर्म, गाल पर ख़राश
सुम्बुलीं खुले हुए दराज़ गेसुओं में आँख मारता हुआ गुलाब,
और छिली हुई सपीद कुहीनों में ओस और धूल की मिली जूली हँसी लिए हुए
वही बला, वही नजिस, वही बदन-दरीदा-फ़ाहिशा
तड़प के आयी—और--
मेरे और भेड़िये के दरम्यान डट गयी!

मौसम का अज़ाब चल रहा है
बारिश में गुलाब चल रहा है

फिर दीदा-ओ-दिल की खैर हो यारब!
फिर ज़ेहन में ख़्वाब चल रहा है

सहरा के सफ़र में कब हूँ तनहा
हमराह सराब चल रहा है

आँधी में दुआ को भी न उठा
यूँ दस्ते-गुलाब शल रहा है

कब शह्रे-जमाल में हमेशा
वहशत का इताब हल रहा है

ज़ख्मों पे छिड़क रहा है ख़ुशबू
आँखों पे गुलाब मल रहा है

माथे पे हवा ने हाथ रखे
जिस्मों को सहाब झल रहा है

मौजों ने वो दुःख दिए बदन को
अब लम्से-हुबाब खल रहा है

क़िरतासे-बदन पे सिलवटें हैं
मलबूसे-किताब गल रहा है

सोचूँ तो वो साथ चल रहा है
देखूँ तो नज़र बदल रहा है

क्यों बात ज़बाँ से कह के कोई
दिल आज भी हाथ मल रहा है

रातों के सफ़र में वहम सा था
ये मैं हूँ कि चाँद चल रहा है

हम भी तेरे बाद ज़ी रहे हैं
और तू भी कहीं बहल रहा है

समझा के अभी गयी हैं सखियाँ
और दिल है कि फिर मचल रहा है

हम ही बुरे हो गए-- कि तेरा
मेयारे-वफ़ा बदल रहा है

पहली सी वो रोशनी नहीं अब
क्या दर्द का चाँद ढल रहा है

गए मौसम में जो खिलते थे गुलाबों की तरह
दिल पे उतरेंगे वही ख़्वाब अज़ाबों की तरह

राख के ढेर पे अब रात बसर करनी है
जल चुके हैं मिरे ख़ेमे मिरे ख़्वाबों की तरह

साअत-ए-दीद कि आरिज़ हैं गुलाबी अब तक
अव्वलीं लम्हों के गुलनार हिजाबों की तरह

वो समुंदर है तो फिर रूह को शादाब करे
तिश्नगी क्यूँ मुझे देता है सराबों की तरह

ग़ैर-मुमकिन है तिरे घर के गुलाबों का शुमार
मेरे रिसते हुए ज़ख़्मों के हिसाबों की तरह

याद तो होंगी वो बातें तुझे अब भी लेकिन
शेल्फ़ में रक्खी हुई बंद किताबों की तरह

कौन जाने कि नए साल में तू किस को पढ़े
तेरा मेआ'र बदलता है निसाबों की तरह

शोख़ हो जाती है अब भी तिरी आँखों की चमक
गाहे गाहे तिरे दिलचस्प जवाबों की तरह

हिज्र की शब मिरी तन्हाई पे दस्तक देगी
तेरी ख़ुश-बू मिरे खोए हुए ख़्वाबों की तरह

क्या ज़िक्र-ए-बर्गो बार, यहाँ पेड़ हिल चुका
अब आए चारासाज़ कि जब ज़ह्न खिल चुका

जब सोज़ने-हवा में पिरोया हो तारे-ख़ूँ
ऐ चश्मे-इंतज़ार तेरा ज़ख़्म सिल चुका

आँखों पे आज चाँद ने अफ़शां चुनी तो क्या
तारा सा एक ख़्वाब तो मिट्टी में मिल चुका

आए हवाए-ज़र्द कि तूफ़ान बर्फ़ का
मिट्टी की गोद करके हरी फूल खिल चुका

बारिश ने रेशे-रेशे में रस भर दिया है--और
ख़ुश है कि यूँ हिसाबे-करमहा-ए-गिल चुका

छूकर ही आएँ मंज़िले-उम्मीद हाथ से
क्या रास्ते से लौटना जब पाँव छिल चुका

उस वक्त भी ख़मोश रही चश्मपोश रात
जब आख़िरी रफ़ीक भी दुश्मन से मिल चुका

दुआ

चाँदनी,
उस दरीचे को छूकर
मेरे नीम-रोशन झरोखे में आए न आए
मगर
मेरी पलकों की तक़दीर से नींद चुनती रहे
और उस आँख के ख़्वाब बुनती रहे!